فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١١٨﴾ قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ

तो बेशक तू ही है ग़ालिब हिक्मत वाला[294] अल्लाह ने फ़रमाया कि येह[295] है वोह दिन जिस में सच्चों को[296]

صِدْقُهُمْ ؕ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ

उन का सच काम आएगा उन के लिये बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा हमेशा उन में रहेंगे

رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١٩﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ

अल्लाह उन से राज़ी और वोह अल्लाह से राज़ी येह है बड़ी काम्याबी अल्लाह ही के लिये है

ع ١٥ ٦
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ؕ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٢٠﴾ ع

आस्मानों और ज़मीन और जो कुछ इन में है सब की सल्तनत और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है[297]

اٰيَاتُهَا ١٦٥ ﴿٦ سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ ٥٥﴾ رُكُوْعَاتُهَا ٢٠

सूरए अन्आ़म मक्किय्या है, इस में एक सो पेंसठ आयतें और बीस रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान रह़्म वाला[1]

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ۬ؕ

सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए[2] और अंधेरियां और रोशनी पैदा की[3]

ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मौत क़ब्ले नुज़ूल इस से साबित न हो सकेगी। **293 :** और मेरा उन का किसी का ह़ाल तुझ से पोशीदा नहीं। **294 :** ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को मा'लूम है कि क़ौम में बा'ज़ लोग कुफ़्र पर मुसिर रहे, बा'ज़ शरफ़े ईमान से मुशर्रफ़ हुए, इस लिये आप की बारगाहे इलाही में येह अ़र्ज़ है कि उन में से जो कुफ़्र पर क़ाइम रहे उन पर तू अ़ज़ाब फ़रमाए तो बिल्कुल ह़क़ व बजा और अ़द्लो इन्साफ़ है क्यूं कि उन्हों ने हुज्जत तमाम होने के बा'द कुफ़्र इख़्तियार किया और जो ईमान लाए उन्हें तू बख़्शे तो तेरा फ़ज़्लो करम है और तेरा हर काम ह़िक्मत है। **295 :** रोज़े क़ियामत **296 :** जो दुन्या में सच्चाई पर रहे जैसे कि ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام। **297 :** सादिक़ को सवाब देने पर भी और काज़िब को अ़ज़ाब फ़रमाने पर भी। **मस्अला :** क़ुदरत मुम्किनात से मुतअ़ल्लिक़ होती है न कि वाजिबात व मुह़ालात से, तो मा'ना आयत के येह हैं कि अल्लाह तआ़ला हर अम्रे मुम्किनुल वुजूद पर क़ादिर है। (جمل) **मस्अला :** किज़्ब वग़ैरा उ़यूबो क़बाएह़ अल्लाह سُبْحَانَهٗ تَبَارَكَ وَتَعَالٰى के लिये मुह़ाल हैं इन को तह़ते क़ुदरत बताना और इस आयत से सनद लाना ग़लत़ व बात़िल है। **1 :** सूरए अन्आ़म मक्की है इस में बीस रुकूअ़ और एक सो पेंसठ आयतें तीन हज़ार एक सो कलिमे और बारह हज़ार नव सो पेंतीस ह़र्फ़ हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि येह कुल सूरत एक ही शब में ब मक़ाम मक्कए मुकर्रमा नाज़िल हुई और इस के साथ सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते आए जिन से आस्मानों के किनारे भर गए। येह भी एक रिवायत में है कि वोह फ़िरिश्ते तस्बीह़ो तक़्दीस करते आए और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم "سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْم" फ़रमाते हुए सर ब सुजूद हुए। **2 :** ह़ज़रते का'ब अह़बार رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ ने फ़रमाया तौरैत में सब से अव्वल येही आयत है, इस आयत में बन्दों को शाने इस्तिग़्ना के साथ ह़म्द की ता'लीम फ़रमाई गई और पैदाइशे आस्मान व ज़मीन का ज़िक्र इस लिये है कि इन में नाज़िरीन के लिये बहुत अ़जाइबे क़ुदरत व ग़राइबे ह़िक्मत और इ़ब्रतें व मनाफ़ेअ़ हैं। **3 :** या'नी हर एक अंधेरी और रोशनी ख़्वाह वोह अंधेरी शब की हो या कुफ़्र की या जह्ल की या जहन्नम की और रोशनी ख़्वाह दिन की हो या ईमान व हिदायत व इ़ल्म व जन्नत की। ظُلُمَات को जम्अ़ और نُوْر को वाह़िद के सीग़े से ज़िक्र फ़रमाने में इस त़रफ़ इशारा है कि बात़िल की राहें बहुत कसीर हैं और राहे ह़क़ सिर्फ़ एक दीने इस्लाम।

www.dawateislami.net

ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ۝١ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ

इस पर[4] काफ़िर लोग अपने रब के बराबर ठहराते हैं[5] वोही है जिस ने तुम्हें[6] मिट्टी से पैदा किया

ثُمَّ قَضٰۤى اَجَلًا ؕ وَ اَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ۝٢ وَ هُوَ

फिर एक मीआ़द का हुक्म रखा[7] और एक मुक़र्ररा वा'दा उस के यहां है[8] फिर तुम लोग शक करते हो और वोही

اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ فِي الْاَرْضِ ؕ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَ جَهْرَكُمْ وَ يَعْلَمُ مَا

अल्लाह है आस्मानों का और ज़मीन का[9] उसे तुम्हारा छुपा और ज़ाहिर सब मा'लूम है और तुम्हारे

تَكْسِبُوْنَ ۝٣ وَ مَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا

काम जानता है और उन के पास कोई भी निशानी उन के रब की निशानियों से नहीं आती मगर उस से मुंह

مُعْرِضِيْنَ ۝٤ فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ

फेर लेते हैं तो बेशक उन्हों ने हक़ को झुटलाया[10] जब उन के पास आया तो अब उन्हें ख़बर हुवा

اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٥ اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ

चाहती है उस चीज़ की जिस पर हंस रहे थे[11] क्या उन्हों ने न देखा कि हम ने उन से पहले[12] कितनी संगतें

مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَ اَرْسَلْنَا السَّمَآءَ

(क़ौमें) खपा दीं उन्हें हम ने ज़मीन में वोह जमाव दिया[13] जो तुम को न दिया और उन पर

عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ۪ وَّ جَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ

मूस्लाधार पानी भेजा[14] और उन के नीचे नहरें बहाईं[15] तो उन्हें हम ने उन के गुनाहों

بِذُنُوْبِهِمْ وَ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝٦ وَ لَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ

के सबब हलाक किया[16] और उन के बा'द और संगत उठाई[17] और अगर हम तुम पर काग़ज़

4 : या'नी बा वुजूद ऐसे दलाइल पर मुत्तलअ़ होने और ऐसे निशानहाए क़ुदरत देखने के **5 :** दूसरों को, हत्ता कि पथ्थरों को पूजते हैं बा वुजूदे कि इस के मुक़िर (इक़्रारी) हैं कि आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला अल्लाह है। **6 :** या'नी तुम्हारी अस्ल हज़रते आदम को जिन की नस्ल से तुम पैदा हुए। **फ़ाएदा :** इस में मुश्रिकीन का रद है जो कहते थे कि हम जब गल कर मिट्टी हो जाएंगे फिर कैसे ज़िन्दा किये जाएंगे ? उन्हें बताया गया कि तुम्हारी अस्ल मिट्टी ही से है तो फिर दोबारा पैदा किये जाने पर क्या तअ़ज्जुब ! जिस क़ादिर ने पहले पैदा किया उस की क़ुदरत से बा'दे मौत ज़िन्दा फ़रमाने को बईद जानना नादानी है। **7 :** जिस के पूरा हो जाने पर तुम मर जाओगे। **8 :** मरने के बा'द उठाने का। **9 :** उस का कोई शरीक नहीं। **10 :** यहां हक़ से या क़ुरआने मजीद की आयात मुराद हैं या सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم और आप के मो'जिज़ात। **11 :** कि वोह कैसी अ़ज़मत वाली है और उस की हंसी बनाने का अन्जाम कैसा वबाल व अ़ज़ाब। **12 :** पिछली उम्मतों में से **13 :** क़ुव्वत व माल और दुन्या के कसीर सामान दे कर **14 :** जिस से खेतियां शादाब हों **15 :** जिस से बाग़ परवरिश पाए और दुन्या की ज़िन्दगानी के लिये ऐशो राहत के अस्बाब बहम पहुंचे **16 :** कि उन्हों ने अम्बिया की तक्ज़ीब की और उन का येह सरो सामान उन्हें हलाकत

www.dawateislami.net

كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ

में कुछ लिखा हुवा उतारते[18] कि वोह उसे अपने हाथों से छूते जब भी काफ़िर कहते कि येह नहीं

اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧ وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ؕ وَلَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا

मगर खुला जादू और बोले[19] इन पर[20] कोई फ़िरिश्ता क्यूं न उतारा गया और अगर हम फ़िरिश्ता उतारते[21]

لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ۝٨ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا

तो काम तमाम हो गया होता[22] फिर उन्हें मोहलत न दी जाती[23] और अगर हम नबी को फ़िरिश्ता करते[24] जब भी उसे मर्द ही बनाते[25]

وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ۝٩ وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ

और उन पर वोही शुबा रखते जिस में अब पड़े हैं और ज़रूर ऐ महबूब तुम से पहले रसूलों के साथ भी ठट्टा किया गया

ع ١٠ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١٠ قُلْ

तो वोह जो उन से हंसते थे उन की हंसी उन्हीं को ले बैठी[26] तुम फ़रमा दो[27]

سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝١١ قُلْ

ज़मीन में सैर करो फिर देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुवा[28] तुम फ़रमाओ

से न बचा सका। **17 :** और दूसरे क़र्न (ज़माने) वालों को उन का जा नशीन किया, मुद्दआ येह है कि गुज़री हुई उम्मतों के हाल से इब्रत व नसीहत हासिल करना चाहिये कि वोह लोग बा वुजूदे कुव्वतो दौलत व कस्रते मालो इयाल के कुफ़्रो तुग़्यान की वज्ह से हलाक कर दिये गए तो चाहिये कि उन के हाल से इब्रत हासिल कर के ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार हों। **18 शाने नुज़ूल :** येह आयत नज़्र बिन हारिस और अ़ब्दुल्लाह बिन उमय्या और नौफ़ल बिन खुवैलिद के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने कहा था कि मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) पर हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे जब तक तुम हमारे पास **अल्लाह** की तरफ़ से किताब न लाओ जिस के साथ चार फ़िरिश्ते हों वोह गवाही दें कि येह **अल्लाह** की किताब है और तुम उस के रसूल हो। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि येह सब हीले बहाने हैं अगर काग़ज़ पर लिखी हुई किताब उतार दी जाती और वोह उसे अपने हाथों से छू कर और टटोल कर देख भी लेते और येह कहने का मौक़अ़ भी न होता कि नज़र बन्दी कर दी गई थी किताब उतरती नज़र आई, था कुछ भी नहीं। तो भी येह बद नसीब ईमान लाने वाले न थे उस को जादू बताते और जिस तरह शक़्क़ुल क़मर को जादू बताया और उस मो'जिज़े को देख कर ईमान न लाए इस तरह इस पर भी ईमान न लाते, क्यूं कि जो लोग इनादन इन्कार करते हैं वोह आयात व मो'जिज़ात से मुन्तफ़ेअ़ नहीं हो सकते। **19 :** मुश्रिकीन **20 :** या'नी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **21 :** और फिर भी येह ईमान न लाते **22 :** या'नी अ़ज़ाब वाजिब हो जाता और येह सुन्नते इलाहिय्यह है कि जब कुफ़्फ़ार कोई निशानी तलब करें और उस के बा'द भी ईमान न लाएं तो अ़ज़ाब वाजिब हो जाता है और वोह हलाक कर दिये जाते हैं। **23 :** एक लम्हे की भी और अ़ज़ाब मुअख़्ख़र न किया जाता तो फ़िरिश्ते का उतारना जिस को वोह तलब करते हैं उन्हें क्या नाफ़ेअ़ होता। **24 :** येह उन कुफ़्फ़ार का जवाब है जो नबी عَلَيْهِ السَّلَام को कहा करते थे येह हमारी तरह बशर हैं और इसी ख़ब्त (जुनून) में वोह ईमान से महरूम रहते थे। इन्हें इन्सानों में से रसूल मब्ऊ़स फ़रमाने की हिक्मत बताई जाती है कि इन के मुन्तफ़ेअ़ होने और ता'लीमे नबी से फ़ैज़ उठाने की येही सूरत है कि नबी सूरते बशरी में जल्वा गर हो, क्यूं कि फ़िरिश्ते को उस की अस्ली सूरत में देखने की तो येह लोग ताब न ला सकते, देखते ही हैबत से बेहोश हो जाते या मर जाते। इस लिये अगर बिलफ़र्ज़ रसूल फ़िरिश्ता ही बनाया जाता **25 :** और सूरते इन्सानी ही में भेजते, ताकि येह लोग उस को देख सकें उस का कलाम सुन सकें उस से दीन के अह़काम मा'लूम कर सकें, लेकिन अगर फ़िरिश्ता सूरते बशरी में आता तो उन्हें फिर वोही कहने का मौक़अ़ रहता कि येह बशर है तो फ़िरिश्ते को नबी बनाने का क्या फ़ाएदा होता। **26 :** वोह मुब्तलाए अ़ज़ाब हुए। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तसल्ली व तस्कीने ख़ातिर है कि आप रन्जीदा व मलूल न हों, कुफ़्फ़ार का पहले अम्बिया के साथ भी येही दस्तूर रहा है और इस का वबाल उन कुफ़्फ़ार को उठाना पड़ा है, नीज़ मुश्रिकीन को तम्बीह है कि पिछली उम्मतों के हाल से इब्रत हासिल करें और अम्बिया के साथ तरीक़े अदब मल्हूज़ रखें ताकि पहलों की तरह मुब्तलाए अ़ज़ाब न हों। **27 :** ऐ हबीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! इन तमस्ख़ुर (ठट्ठा) करने वालों से कि तुम **28 :** और

www.dawateislami.net

لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ

किस का है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में[29] तुम फ़रमाओ अल्लाह का है[30] उस ने अपने करम के ज़िम्मे पर रह़मत लिख ली है[31]

لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ

बेशक ज़रूर तुम्हें क़ियामत के दिन जम्अ़ करेगा[32] इस में कुछ शक नहीं वोह जिन्हों ने अपनी जान नुक़्सान में डाली[33]

فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٢ وَ لَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَ النَّهَارِ ؕ وَ هُوَ السَّمِيْعُ

ईमान नहीं लाते और उसी का है जो कुछ बसता है रात और दिन में[34] और वोही है सुनता

الْعَلِيْمُ ۝١٣ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ

जानता[35] तुम फ़रमाओ क्या अल्लाह के सिवा किसी और को वाली बनाऊं[36] वोह अल्लाह जिस ने आस्मान व ज़मीन पैदा किये

وَ هُوَ يُطْعِمُ وَ لَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ اِنِّيْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ

और वोह खिलाता है और खाने से पाक है[37] तुम फ़रमाओ मुझे हुक्म हुवा है कि सब से पहले गरदन रखूं[38]

وَ لَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١٤ قُلْ اِنِّيْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ

और हरगिज़ शिर्क वालों में न होना तुम फ़रमाओ अगर मैं अपने रब की ना फ़रमानी करूं तो मुझे

عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝١٥ مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ؕ

बड़े दिन[39] के अ़ज़ाब का डर है उस दिन जिस से अ़ज़ाब फेर दिया जाए[40] ज़रूर उस पर अल्लाह की मेह्र (रह़मत) हुई

وَ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ۝١٦ وَ اِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا

और येही खुली काम्याबी है और अगर तुझे अल्लाह कोई बुराई[41] पहुंचाए तो उस के सिवा उस का कोई दूर करने वाला

उन्हों ने कुफ़्र व तक्ज़ीब का क्या समरा पाया। **29 :** अगर वोह इस का जवाब न दें तो **30 :** क्यूं कि इस के सिवा कोई जवाब ही नहीं है और वोह इस के ख़िलाफ़ नहीं कर सकते क्यूं कि बुत जिन को मुशरिकीन पूजते हैं वोह बेजान हैं किसी चीज़ के मालिक होने की सलाहिय्यत नहीं रखते खुद दूसरे के मम्लूक हैं, आस्मान व ज़मीन का वोही मालिक हो सकता है जो ह़य्यु व क़य्यूम, अज़ली व अबदी, क़ादिरे मुत्लक़, हर शै पर मुतसर्रिफ़ व हुक्मरान हो, तमाम चीज़ें उस के पैदा करने से वुजूद में आई हों, ऐसा सिवाए अल्लाह के कोई नहीं, इस लिये तमाम समावी व अर्ज़ी काएनात का मालिक उस के सिवा कोई नहीं हो सकता। **31 :** या'नी उस ने रह़मत का वा'दा किया और उस का वा'दा ख़िलाफ़ नहीं हो सकता क्यूं कि वा'दा ख़िलाफ़ी व किज़्ब उस के लिये मुह़ाल है। और रह़मत आ़म है दीनी हो या दुन्यवी अपनी मा'रिफ़त और तौह़ीद और इल्म की त़रफ़ हिदायत फ़रमाना भी रह़मत में दाख़िल है और कुफ़्फ़ार को मोहलत देना और उ़क़ूबत में ता'जील न फ़रमाना भी, कि इस से उन्हें तौबा और इनाबत का मौक़अ़ भी मिलता है। (جمل وغیرہ) **32 :** और आ'माल का बदला देगा **33 :** कुफ़्र इख़्तियार कर के **34 :** या'नी तमाम मौजूदात उसी की मिल्क है और वोह सब का ख़ालिक़, मालिक, रब है। **35 :** उस से कोई चीज़ पोशीदा नहीं। **36 शाने नुज़ूल :** जब कुफ़्फ़ार ने हुज़ूरे अक़्दस صلى الله عليه وسلم को अपने बाप दादा के दीन की दा'वत दी तो येह आयत नाज़िल हुई। **37 :** या'नी ख़ल्क़ सब उस की मोह़ताज है, वोह सब से बे नियाज़। **38 :** क्यूं कि नबी अपनी उम्मत से दीन में साबिक़ होते हैं। **39 :** या'नी रोज़े क़ियामत **40 :** और नजात दी जाए **41 :** बीमारी या तंगदस्ती या और कोई बला।

www.dawateislami.net

هُوَ ؕ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۷﴾ وَهُوَ الْقَاهِرُ

नहीं और अगर तुझे भलाई पहुंचाए[42] तो वोह सब कुछ कर सकता है[43] और वोही ग़ालिब है

فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿۱۸﴾ قُلْ اَیُّ شَیْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ

अपने बन्दों पर और वोही है हिक्मत वाला ख़बरदार तुम फ़रमाओ सब से बड़ी गवाही किस की[44]

قُلِ اللّٰهُ ۙ قف شَهِيْدٌۢ بَيْنِیْ وَبَيْنَكُمْ ۙ قف وَاُوْحِیَ اِلَیَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ

तुम फ़रमाओ कि अल्लाह गवाह है मुझ में और तुम में[45] और मेरी तरफ़ इस क़ुरआन की वहय हुई है

لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ اَىِٕنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً

कि मैं इस से तुम्हें डराऊं[46] और जिन जिन को पहुंचे[47] तो क्या तुम[48] येह गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ

اُخْرٰی ؕ قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا

और ख़ुदा हैं तुम फ़रमाओ[49] कि मैं येह गवाही नहीं देता[50] तुम फ़रमाओ कि वोह तो एक ही मा'बूद है[51] और मैं बेज़ार हूं उन से जिन को

وقف لازم تُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹﴾ اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا یَعْرِفُوْنَ

तुम शरीक ठहराते हो[52] जिन को हम ने किताब दी[53] इस नबी को पहचानते हैं[54] जैसा अपने

42 : मिस्ल सिह्हत व दौलत वग़ैरा के। **43 :** क़ादिरे मुत्लक़ है हर शै पर ज़ाती क़ुदरत रखता है, कोई उस की मशिय्यत के ख़िलाफ़ कुछ नहीं कर सकता तो कोई उस के सिवा मुस्तहिक़े इबादत कैसे हो सकता है। येह रद्दे शिर्क की दिल में असर करने वाली दलील है। **44 शाने नुज़ूल :** अहले मक्का रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहने लगे कि ऐ मुहम्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) हमें कोई ऐसा दिखाइये जो आप की रिसालत की गवाही देता हो, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **45 :** और इतनी बड़ी और क़ाबिले क़बूल गवाही और किस की हो सकती है। **46 :** या'नी अल्लाह तआला मेरी नुबुव्वत की शहादत देता है इस लिये कि उस ने मेरी तरफ़ इस क़ुरआन की वहय फ़रमाई और येह ऐसा मो'जिज़ा है कि तुम बा वुजूद फ़सीह, बलीग़, साहिबे ज़बान होने के इस के मुक़ाबले से आजिज़ रहे तो इस किताब का मुझ पर नाज़िल होना अल्लाह की तरफ़ से मेरे रसूल होने की शहादत है, जब येह क़ुरआन अल्लाह तआला की तरफ़ से यक़ीनी शहादत है और मेरी तरफ़ वहय फ़रमाया गया ताकि मैं तुम्हें डराऊं कि तुम हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त न करो। **47 :** या'नी मेरे बा'द क़ियामत तक आने वाले जिन्हें येह क़ुरआने पाक पहुंचे ख़्वाह वोह इन्सान हों या जिन्न उन सब को मैं हुक्मे इलाही की मुख़ालफ़त से डराऊं। हदीस शरीफ़ में है कि जिस शख़्स को क़ुरआने पाक पहुंचा गोया कि उस ने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को देखा और आप का कलामे मुबारक सुना। हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ ने फ़रमाया कि जब येह आयत नाज़िल हुई तो रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने किस्रा और क़ैसर वग़ैरा सलातीन को दा'वते इस्लाम के मक्तूब भेजे। (مدارک وخازن) इस की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है مَنْۢ بَلَغَ में "مَنْ" मरफ़ूउल महल है और मा'ना येह हैं कि इस क़ुरआन से मैं तुम को डराऊं और वोह डराएं जिन्हें येह क़ुरआन पहुंचे। तिरमिज़ी की हदीस में है कि अल्लाह तरो ताज़ा करे उस को जिस ने हमारा कलाम सुना और जैसा सुना वैसा पहुंचाया, बहुत से पहुंचाए हुए सुनने वाले से ज़ियादा अहल होते हैं। और एक रिवायत में है सुनने वाले से ज़ियादा अफ़्क़ह (ग़ौरो फ़िक्र करने वाले) होते हैं। इस से फ़ुक़हा की मन्ज़िलत मा'लूम होती है। **48 :** ऐ मुशरिकीन ! **49 :** ऐ हबीबे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! **50 :** जो गवाही तुम देते हो और अल्लाह के साथ दूसरे मा'बूद ठहराते हो। **51 :** उस का कोई शरीक नहीं **52 मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि जो शख़्स इस्लाम लाए उस को चाहिये कि तौहीदो रिसालत की शहादत के साथ इस्लाम के हर मुख़ालिफ़े अक़ीदा व दीन से बेज़ारी का इज़्हार करे। **53 :** या'नी उलमाए यहूदो नसारा जिन्हों ने तौरैत व इन्जील पाई। **54 :** आप के हुल्ये शरीफ़ और आप की ना'त व सिफ़त से जो उन किताबों में मज़्कूर है।

www.dawateislami.net

اَبْنَآءَهُمْ ۘ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ ع وَمَنْ

बेटों को पहचानते हैं[55] जिन्हों ने अपनी जान नुक़्सान में डाली वोह ईमान नहीं लाते और उस से

اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ

बढ़ कर ज़ालिम कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे[56] या उस की आयतें झुटलाए बेशक ज़ालिम फ़लाह

الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ

न पाएंगे और जिस दिन हम सब को उठाएंगे फिर मुश्रिकों से फ़रमाएंगे कहां हैं

شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ

तुम्हारे वोह शरीक जिन का तुम दा'वा करते थे फिर उन की कुछ बनावट न रही[57] मगर येह कि

قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴿٢٣﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ

बोले हमें अपने रब अल्लाह की क़सम कि हम मुश्रिक न थे देखो कैसा झूट बांधा खुद अपने ऊपर[58]

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ

और गुम गई उन से जो बातें बनाते थे और उन में कोई वोह है जो तुम्हारी त़रफ़ कान लगाता है[59]

وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ

और हम ने उन के दिलों पर गि़लाफ़ कर दिये हैं कि उसे न समझें और उन के कानों में टेंट (ठोंसी हुई रूई) और अगर

يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ

सारी निशानियां देखें तो उन पर ईमान न लाएंगे यहां तक कि जब तुम्हारे हु़ज़ूर तुम से झगड़ते हाज़िर हों तो

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَهُمْ يَنْهَوْنَ

काफ़िर कहें येह तो नहीं मगर अगलों की दास्तानें[60] और वोह उस से रोकते[61]

55 : या'नी बिगै़र किसी शको शुबा के। **56 :** उस का शरीक ठहराए या जो बात उस की शान के लाइक़ न हो उस की त़रफ़ निस्बत करे। **57 :** या'नी कुछ मा'ज़िरत न मिली। **58 :** कि उ़म्र भर के शिर्क ही से मुकर गए। **59 :** अबू सुफ़्यान, वलीद व नज़्र और अबू जह्ल वगै़रा जम्अ़ हो कर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तिलावते कु़रआने पाक सुनने लगे तो नज़्र से उस के साथियों ने कहा कि मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) क्या कहते हैं ? कहने लगा मैं नहीं जानता ज़बान को ह़रकत देते हैं और पहलों के कि़स्से कहते हैं जैसे मैं तुम्हें सुनाया करता हूं। अबू सुफ़्यान ने कहा कि इन की बातें मुझे ह़क़ मा'लूम होती हैं। अबू जह्ल ने कहा कि इस का इक़्रार करने से मर जाना बेहतर है। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **60 :** इस से उन का मत़लब कलामे पाक के वह़्ये इलाही होने का इन्कार करना है। **61 :** या'नी मुश्रिकीन लोगों को कु़रआन शरीफ़ से या रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से और आप पर ईमान लाने और आप का इत्तिबाअ़ करने से रोकते हैं। **शाने नुज़ूल :** येह आयत कुफ़्फ़ारे मक्का के ह़क़ में नाज़िल हुई जो लोगों को सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से और आप पर ईमान लाने और आप की मजलिस में हाज़िर होने और कु़रआने करीम सुनने से रोकते थे और खु़द भी दूर रहते थे कि कहीं कलामे मुबारक उन के दिल में असर न कर जाए।

www.dawateislami.net

عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّاۤ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۲۶﴾

और उस से दूर भागते हैं और हलाक नहीं करते मगर अपनी जानें[62] और उन्हें शुऊ़र नहीं

وَلَوْ تَرٰۤى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ

और कभी तुम देखो जब वोह आग पर खड़े किये जाएंगे तो कहेंगे काश किसी त़रह़ हम वापस भेजे जाएं[63] और अपने रब की आयतें

رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۷﴾ بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ

न झुटलाएं और मुसल्मान हो जाएं बल्कि उन पर खुल गया जो पहले

مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۲۸﴾

छुपाते थे[64] और अगर वापस भेजे जाएं तो फिर वोही करें जिस से मन्अ़ किये गए थे और बेशक वोह ज़रूर झूटे हैं

وَقَالُوْۤا اِنْ هِیَ اِلَّا حَیَاتُنَا الدُّنْیَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِیْنَ ﴿۲۹﴾ وَلَوْ

और बोले[65] वोह तो येही हमारी दुन्या की ज़िन्दगी है और हमें उठना नहीं[66] और कभी

تَرٰۤى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ قَالَ اَلَیْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَ

तुम देखो जब अपने रब के हुज़ूर खड़े किये जाएंगे फ़रमाएगा क्या येह ह़क़ नहीं है[67] कहेंगे क्यूं नहीं हमें

رَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۰﴾ ع قَدْ خَسِرَ الَّذِیْنَ ع ۳۰

अपने रब की क़सम फ़रमाएगा तो अब अ़ज़ाब चखो बदला अपने कुफ़्र का बेशक हार में रहे वोह जिन्हों ने अपने

كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا یٰحَسْرَتَنَا

रब से मिलने का इन्कार किया यहां तक कि जब उन पर क़ियामत अचानक आ गई बोले हाए अफ़्सोस

عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِیْهَا ۙ وَهُمْ یَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ؕ اَلَا

हमारा इस पर कि इस के मानने में तक़्सीर की और वोह अपने[68] बोझ अपनी पीठ पर लादे हुए हैं अरे कितना

ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि येह आयत हुज़ूर के चचा अबू त़ालिब के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मुश्रिकीन को तो हुज़ूर की ईज़ा रसानी से रोकते थे और ख़ुद ईमान लाने से बचते थे। **62 :** या'नी इस का ज़रर ख़ुद उन्हीं को पहुंचता है। **63 :** दुन्या में **64 :** जैसा कि ऊपर इसी रुकूअ़ में मज़्कूर हो चुका कि मुश्रिकीन से जब फ़रमाया जाएगा कि तुम्हारे शरीक कहां हैं तो वोह अपने कुफ़्र को छुपा जाएंगे और **अल्लाह** की क़सम खा कर कहेंगे कि हम मुश्रिक न थे। इस आयत में बताया गया कि फिर जब उन्हें ज़ाहिर हो जाएगा जो वोह छुपाते थे या'नी उन का कुफ़्र इस त़रह़ ज़ाहिर होगा कि उन के आ'ज़ा व जवारेह़ उन के कुफ़्रो शिर्क की गवाहियां देंगे तब वोह दुन्या में वापस जाने की तमन्ना करेंगे। **65 :** या'नी कुफ़्फ़ार जो बअ़्स व आख़िरत के मुन्किर हैं और इस का वाक़िआ़ येह था कि जब नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने कुफ़्फ़ार को क़ियामत के अह़वाल और आख़िरत की ज़िन्दगानी, ईमानदारों और फ़रमां बरदारों के सवाब, काफ़िरों और ना फ़रमानों पर अ़ज़ाब का ज़िक्र फ़रमाया तो काफ़िर कहने लगे कि ज़िन्दगी तो बस दुन्या ही की है। **66 :** या'नी मरने के बा'द। **67 :** क्या तुम मरने के बा'द ज़िन्दा नहीं किये गए ? **68 :** गुनाहों के।

www.dawateislami.net

سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٣١﴾ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ

बुरा बोझ उठाए हैं[69] और दुन्या की ज़िन्दगी नहीं मगर खेलकूद[70] और बेशक

الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٣٢﴾ قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ

पिछला घर भला उन के लिये जो डरते हैं[71] तो क्या तुम्हें समझ नहीं हमें मा'लूम है कि

لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ

तुम्हें रन्ज देती है वोह बात जो येह कह रहे हैं[72] तो वोह तुम्हें नहीं झुटलाते[73] बल्कि ज़ालिम

بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا

अल्लाह की आयतों से इन्कार करते हैं[74] और तुम से पहले रसूल झुटलाए गए तो उन्हों ने सब्र किया

عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰۤى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ

उस झुटलाने और ईज़ाएं पाने पर यहां तक कि उन्हें हमारी मदद आई[75] और अल्लाह की बातें बदलने वाला

اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٤﴾ وَاِنْ كَانَ كَبُرَ

कोई नहीं[76] और तुम्हारे पास रसूलों की ख़बरें आ ही चुकी हैं[77] और अगर उन का मुंह

عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْاَرْضِ اَوْ

फेरना तुम पर शाक़ गुज़रा है[78] तो अगर तुम से हो सके तो ज़मीन में कोई सुरंग तलाश कर लो या

69 : हदीस शरीफ़ में है कि काफ़िर जब अपनी क़ब्र से निकलेगा तो उस के सामने निहायत क़बीह भयानक और बहुत बदबूदार सूरत आएगी वोह काफ़िर से कहेगी तू मुझे पहचानता है ? काफ़िर कहेगा कि नहीं, तो वोह काफ़िर से कहेगी : मैं तेरा ख़बीस अमल हूं दुन्या में तू मुझ पर सुवार रहा था आज मैं तुझ पर सुवार होउंगा और तुझे तमाम ख़ल्क़ में रुस्वा करूंगा फिर वोह उस पर सुवार हो जाता है। **70 :** जिसे बक़ा नहीं जल्द गुज़र जाती है और नेकियां और ताअ़तें अगर्चे मोमिनीन से दुन्या ही में वाक़ेअ़ हों लेकिन वोह उमूरे आख़िरत में से हैं। **71 :** इस से साबित हुवा कि आ'माले मुत्तक़ीन के सिवा दुन्या में जो कुछ है सब लह्वो लअ़ब है। **72 शाने नुज़ूल :** अख़्नस बिन शरीक़ और अबू जह्ल की बाहम मुलाक़ात हुई तो अख़्नस ने अबू जह्ल से कहा : ऐ अबुल हकम ! (कुफ़्फ़ार अबू जह्ल को अबुल हकम कहते थे) येह तन्हाई की जगह है और यहां कोई ऐसा नहीं जो मेरी तेरी बात पर मुत्तलअ़ हो सके अब तू मुझे ठीक ठीक बता कि मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) सच्चे हैं या नहीं। अबू जह्ल ने कहा कि अल्लाह की क़सम ! मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) बेशक सच्चे हैं, कभी कोई झूटा हर्फ़ उन की ज़बान पर न आया मगर बात येह है कि येह क़ुसय की औलाद हैं और लिवा, सिक़ायत, हिजाबत, नदवा वग़ैरा तो सारे ए'ज़ाज़ इन्हें हासिल ही हैं नुबुव्वत भी इन्हीं में हो जाए तो बाक़ी क़ुरशियों के लिये ए'ज़ाज़ क्या रह गया। तिरमिज़ी ने हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा से रिवायत की, कि अबू जह्ल ने हज़रत नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा हम आप की तक्ज़ीब नहीं करते हम तो उस किताब की तक्ज़ीब करते हैं जो आप लाए, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **73 :** इस में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ातिर है कि क़ौम हुज़ूर के सिद्क़ का ए'तिक़ाद रखती है लेकिन उन की ज़ाहिरी तक्ज़ीब का बाइ़स उन का ह़सद व इ़नाद है। **74 :** आयत के येह मा'ना भी होते हैं कि ऐ ह़बीबे अकरम आप की तक्ज़ीब आयाते इलाहिय्यह की तक्ज़ीब है और तक्ज़ीब करने वाले ज़ालिम। **75 :** और तक्ज़ीब करने वाले हलाक किये गए। **76 :** उस के हुक्म को कोई पलट नहीं सकता रसूलों की नुसरत और उन की तक्ज़ीब करने वालों का हलाक उस ने जिस वक़्त मुक़द्दर फ़रमाया है ज़रूर होगा। **77 :** और आप जानते हैं कि उन्हें कुफ़्फ़ार से कैसी ईज़ाएं पहुंचीं येह पेशे नज़र रख कर आप दिल मुत्मइन रखें। **78 :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को बहुत ख़्वाहिश थी कि सब लोग इस्लाम ले आएं, जो इस्लाम से महरूम रहते उन की महरूमी आप पर बहुत शाक़ रहती।

www.dawateislami.net

سُلَّمًا فِي السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى

आस्मान में ज़ीना फिर उन के लिये निशानी ले आओ[79] और अल्लाह चाहता तो उन्हें हिदायत पर इकट्ठा कर देता

فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۳۵﴾ اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؘ وَ

तो ऐ सुनने वाले तू हरगिज़ नादान न बन मानते तो वोही हैं जो सुनते हैं[80] और

الْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ

उन मुर्दा दिलों[81] को अल्लाह उठाएगा[82] फिर उस की तरफ़ हांके जाएंगे[83] और बोले[84] उन पर कोई निशानी क्यूं न उतरी

مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا

उन के रब की तरफ़ से[85] तुम फ़रमाओ कि अल्लाह क़ादिर है कि कोई निशानी उतारे लेकिन उन में बहुत निरे

يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ

जाहिल हैं[86] और नहीं कोई ज़मीन में चलने वाला और न कोई परिन्द कि अपने परों उड़ता है मगर

اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ

तुम जैसी उम्मतें[87] हम ने इस किताब में कुछ उठा न रखा[88] फिर अपने रब की तरफ़

يُحْشَرُوْنَ ﴿۳۸﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ

उठाए जाएंगे[89] और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं बहरे और गूंगे हैं[90] अंधेरों में[91] अल्लाह

79 : मक़्सूद उन के ईमान की तरफ़ से सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की उम्मीद मुन्क़तअ़ करना है ताकि आप को उन के ए'राज़ करने और ईमान न लाने से रन्जो तक्लीफ़ न हो। 80 : दिल लगा कर समझने के लिये वोही पन्द पज़ीर होते (नसीहत क़बूल करते) हैं और दीने हक़ की दा'वत क़बूल करते हैं। 81 : या'नी कुफ़्फ़ार 82 : रोज़े क़ियामत 83 : और अपने आ'माल की जज़ा पाएंगे। 84 : कुफ़्फ़ारे मक्का 85 : कुफ़्फ़ार की गुमराही और उन की सरकशी इस हद तक पहुंच गई कि वोह कसीर आयत व मो'जिज़ात जो उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से मुशाहदा किये थे उन पर क़नाअ़त न की और सब से मुकर गए और ऐसी आयत तलब करने लगे जिस के साथ अ़ज़ाबे इलाही हो, जैसा कि उन्हों ने कहा था "اَللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ" या रब ! अगर येह हक़ है तेरे पास से तो हम पर आस्मान से पथ्थर बरसा। (تفسیر ابوالسعود) 86 : नहीं जानते कि उस का नुज़ूल उन के लिये बला है कि इन्कार करते ही हलाक कर दिये जाएंगे। 87 : या'नी तमाम जानदार ख़्वाह वोह बहाइम हों या दरिन्दे या परिन्द तुम्हारी मिस्ल उम्मतें हैं। येह मुमासलत (मिस्ल होना) जमीअ़ वुजूह से तो है नहीं बा'ज़ से है, उन वुजूह के बयान में बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि येह हैवानात तुम्हारी तरह अल्लाह को पहचानते, वाहिद जानते, उस की तस्बीह़ पढ़ते, इबादत करते हैं। बा'ज़ का क़ौल है कि वोह मख़्लूक़ होने में तुम्हारी मिस्ल हैं। बा'ज़ ने कहा कि वोह इन्सान की तरह बाहमी उल्फ़त रखते और एक दूसरे से तफ़्हीमो तफ़हहुम (बात समझते और समझाया) करते हैं। बा'ज़ का क़ौल है कि रोज़ी तलब करने, हलाकत से बचने, नर मादा का इम्तियाज़ रखने में तुम्हारी मिस्ल हैं। बा'ज़ ने कहा पैदा होने, मरने, मरने के बा'द हिसाब के लिये उठने में तुम्हारी मिस्ल हैं। 88 : या'नी जुम्ला उ़लूम और तमाम "مَا كَانَ وَمَا يَكُوْن" का इस में बयान है और जमीअ़ अश्या का इ़ल्म इस में है, इस किताब से येह क़ुरआने करीम मुराद है या लौहे महफ़ूज़। (جمل وغیرہ) 89 : और तमाम दवाब व तुयूर का हिसाब होगा, इस के बा'द वोह ख़ाक कर दिये जाएंगे। 90 : कि हक़ मानना और हक़ बोलना उन्हें मुयस्सर नहीं। 91 : जहल और हैरत और कुफ़्र के।

www.dawateislami.net

يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۳۹﴾ قُلْ

जिसे चाहे गुमराह करे और जिसे चाहे सीधे रस्ते डाल दे[92] तुम फ़रमाओ

اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ

भला बताओ तो अगर तुम पर **अल्लाह** का अ़ज़ाब आए या क़ियामत क़ाइम हो क्या **अल्लाह** के सिवा किसी और को पुकारोगे[93]

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۴۰﴾ بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ

अगर सच्चे हो[94] बल्कि उसी को पुकारोगे तो वोह अगर चाहे[95] जिस पर उसे पुकारते हो

اِنْ شَآءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ﴿۴۱﴾ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰۤى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ ع

उसे उठा ले और शरीकों को भूल जाओगे[96] और बेशक हम ने तुम से पहली उम्मतों की त़रफ़ रसूल भेजे

فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿۴۲﴾ فَلَوْلَاۤ اِذْ

तो उन्हें सख़्ती और तक्लीफ़ से पकड़ा[97] कि वोह किसी त़रह़ गिड़गिड़ाएं[98] तो क्यूं न हुवा कि जब

جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ

उन पर हमारा अ़ज़ाब आया तो गिड़गिड़ाए होते लेकिन उन के दिल सख़्त हो गए[99] और शैत़ान ने उन के काम

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۴۳﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ

उन की निगाह में भले कर दिखाए फिर जब उन्हों ने भुला दिया जो नसीह़तें उन को की गई थीं[100] हम ने उन पर हर चीज़

كُلِّ شَيْءٍ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ

के दरवाज़े खोल दिये[101] यहां तक कि जब ख़ुश हुए उस पर जो उन्हें मिला[102] तो हम ने अचानक उन्हें पकड़ लिया[103] अब वोह

مُّبْلِسُوْنَ ﴿۴۴﴾ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ؕ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ

आस टूटे रह गए तो जड़ काट दी गई ज़ालिमों की[104] और सब ख़ूबियों सराहा **अल्लाह** रब

92 : इस्लाम की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। **93 :** और जिन को दुन्या में मा'बूद मानते थे उन से ह़ाजत रवाई चाहोगे। **94 :** अपने इस दा'वे में कि مَعَاذَ اللّٰه बुत मा'बूद हैं तो इस वक़्त पुकारो मगर ऐसा न करोगे। **95 :** तो उस मुसीबत को **96 :** जिन्हें अपने ए'तिक़ादे बात़िल में मा'बूद जानते थे और उन की त़रफ़ इल्तिफ़ात भी न करोगे क्यूं कि तुम्हें मा'लूम है कि वोह तुम्हारे काम नहीं आ सकते। **97 :** फ़क़्रो इफ़्लास और बीमारी वग़ैरा में मुब्तला किया। **98 :** **अल्लाह** की त़रफ़ रुजूअ़ करें, अपने गुनाहों से बाज़ आएं। **99 :** वोह बारगाहे इलाही में आ़जिज़ी करने के बजाए कुफ़्रो तक्ज़ीब पर मुसिर रहे। **100 :** और वोह किसी त़रह़ पन्द पज़ीर न हुए न पेश आई हुई मुसीबतों से न अम्बिया की नसीह़तों से। **101 :** सिह़्ह़तो सलामत और वुस्अ़ते रिज़्क़ व ऐ़श वग़ैरा के। **102 :** और अपने आप को उस का मुस्तह़िक़ समझे और क़ारून की त़रह़ तकब्बुर करने लगे **103 :** और मुब्तलाए अ़ज़ाब किया। **104 :** और सब के सब हलाक कर दिये गए कोई बाक़ी न छोड़ा गया।

www.dawateislami.net

الْغٰفِلِيْنَ ﴿٤٥﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ

सारे जहां का[105] तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर अल्लाह तुम्हारे कान आंख ले ले और तुम्हारे

عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ

दिलों पर मोहर कर दे[106] तो अल्लाह के सिवा कौन ख़ुदा है कि तुम्हें येह चीज़ें ला दे[107] देखो हम किस किस रंग से आयतें बयान करते हैं

ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ

फिर वोह मुंह फेर लेते हैं तुम फ़रमाओ भला बताओ तो अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब आए अचानक[108] या

جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ

खुल्लम खुल्ला[109] तो कौन तबाह होगा सिवा ज़ालिमों के[110] और हम नहीं भेजते रसूलों को

اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ

मगर ख़ुशी और डर सुनाते[111] तो जो ईमान लाए और संवरे[112] उन को न कुछ अन्देशा

لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا

न कुछ ग़म और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाईं उन्हें अ़ज़ाब पहुंचेगा

كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٤٩﴾ قُلْ لَّاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ

बदला उन की बे हुक्मी का तुम फ़रमा दो मैं तुम से नहीं कहता मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और न येह कहूं कि मैं आप

الْغَيْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ ؕ قُلْ هَلْ

ग़ैब जान लेता हूं और न तुम से येह कहूं कि मैं फ़िरिश्ता हूं[113] मैं तो उसी का ताबेअ़ हूं जो मुझे वह्य आती है[114] तुम फ़रमाओ क्या

105 : इस से मा'लूम हुवा कि गुमराहों, बे दीनों, ज़ालिमों की हलाकत अल्लाह तआ़ला की ने'मत है इस पर शुक्र करना चाहिये। **106 :** और इल्मो मा'रिफ़त का तमाम निज़ाम दरहम बरहम हो जाए **107 :** इस का जवाब येही है कि कोई नहीं, तो अब तौहीद पर दलील क़ाइम हो गई कि जब अल्लाह के सिवा कोई इतनी क़ुदरत व इख़्तियार वाला नहीं तो इबादत का मुस्तहिक़ सिर्फ़ वोही है और शिर्क बद तरीन जुल्म व जुर्म है। **108 :** जिस के आसार व अ़लामात पहले से मा'लूम न हों **109 :** आंखों देखते **110 :** या'नी काफ़िरों के, कि उन्हों ने अपनी जानों पर जुल्म किया और येह हलाकत उन के हक़ में अ़ज़ाब है। **111 :** ईमानदारों को जन्नत व सवाब की बिशारतें देते और काफ़िरों को जहन्नम व अ़ज़ाब से डराते। **112 :** नेक अ़मल करे। **113 :** कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा था कि वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से त़रह़ त़रह़ के सुवाल किया करते थे, कभी कहते कि आप रसूल हैं तो हमें बहुत सी दौलत और माल दीजिये कि हम कभी मोह़ताज न हों, हमारे लिये पहाड़ों को सोना कर दीजिये, कभी कहते कि गुज़श्ता और आयिन्दा की ख़बरें सुनाइये और हमें हमारे मुस्तक़्बिल की ख़बर दीजिये क्या क्या पेश आएगा ? ताकि हम मनाफ़ेअ़ ह़ासिल कर लें और नुक़्सानों से बचने के पहले से इन्तिज़ाम कर लें, कभी कहते हमें क़ियामत का वक़्त बताइये कब आएगी ? कभी कहते कि आप कैसे रसूल हैं जो खाते पीते भी हैं, निकाह़ भी करते हैं। उन की इन तमाम बातों का इस आयत में जवाब दिया गया कि येह कलाम निहायत बे महल और जाहिलाना है, क्यूं कि जो शख़्स किसी अम्र का मुद्दई हो उस से वोही बातें दरयाफ़्त की जा सकती हैं जो उस के दा'वे से तअ़ल्लुक़ रखती हों ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ बातों का दरयाफ़्त करना और उन को उस दा'वे के ख़िलाफ़ हुज्जत बनाना इन्तिहा दरजे का जहल है। इस लिये इर्शाद हुवा कि आप फ़रमा दीजिये कि मेरा दा'वा येह तो नहीं कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं जो तुम मुझ से

www.dawateislami.net

يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَ الْبَصِيْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۵۰﴾ وَ اَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ ع ٥

बराबर हो जाएंगे अन्धे और अंख्यारे[115] तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते और इस क़ुरआन से उन्हें डराओ जिन्हें

يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْۤا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّ لَا شَفِيْعٌ

ख़ौफ़ हो कि अपने रब की त़रफ़ यूं उठाए जाएं कि अल्लाह के सिवा न उन का कोई ह़िमायती हो न कोई सिफ़ारिशी

لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۵۱﴾ وَ لَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَ

इस उम्मीद पर कि वोह परहेज़ गार हो जाएं और दूर न करो उन्हें जो अपने रब को पुकारते हैं सुब्ह़ और

الْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّ مَا مِنْ

शाम उस की रिज़ा चाहते[116] तुम पर उन के ह़िसाब से कुछ नहीं और उन पर

حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۲﴾ وَ

तुम्हारे ह़िसाब से कुछ नहीं[117] फिर उन्हें तुम दूर करो तो येह काम इन्साफ़ से बईद है और

كَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْۤا اَهٰۤؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ

यूंही हम ने उन में एक को दूसरे के लिये फ़ित्ना बनाया कि मालदार काफ़िर मोहताज मुसल्मानों को देख कर[118] कहें क्या येह हैं जिन पर अल्लाह ने एह़सान किया

بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿۵۳﴾ وَ اِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ

हम में से[119] क्या अल्लाह ख़ूब नहीं जानता ह़क़ मानने वालों को और जब तुम्हारे ह़ुज़ूर वोह ह़ाज़िर हों जो

मालो दौलत का सुवाल करो और मैं उस की त़रफ़ इल्तिफ़ात न करूं तो रिसालत से मुन्किर हो जाओ, न मेरा दा'वा ज़ाती ग़ैबदानी का है कि अगर मैं तुम्हें गुज़श्ता या आयिन्दा की ख़बरें न बताऊं तो मेरी नुबुव्वत मानने में उ़ज़्र कर सको, न मैं ने फ़िरिश्ता होने का दा'वा किया है कि खाना पीना निकाह़ करना क़ाबिले ए'तिराज़ हो, तो जिन चीज़ों का दा'वा ही नहीं किया उन का सुवाल बे मह़ल है और उस की इजाबत (जवाब देही) मुझ पर लाज़िम नहीं, मेरा दा'वा नुबुव्वत व रिसालत का है और जब इस पर ज़बर दस्त दलीलें और क़वी बुरहानें क़ाइम हो चुकीं तो ग़ैर मुतअ़ल्लिक़ बातें पेश करना क्या मा'नी रखता है। **फ़ाएदा :** इस से साफ़ वाज़ेह़ हो गया कि इस आयते करीमा को सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के ग़ैब पर मुत्तलअ़ किये जाने की नफ़ी के लिये सनद बनाना ऐसा ही बे मह़ल है जैसा कुफ़्फ़ार का इन सुवालात को इन्कारे नुबुव्वत की दस्तावेज़ बनाना बे मह़ल था। इलावा बरीं इस आयत से ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم के इल्मे अ़त़ाई की नफ़ी किसी त़रह मुराद ही नहीं हो सकती क्यूं कि इस सूरत में तआ़रुज़ बैनल आयात का क़ाइल होना पड़ेगा وَهُوَ بَاطِلٌ (और येह बात़िल है)। मुफ़स्सिरीन का येह भी क़ौल है कि ह़ुज़ूर का "لَآ اَقُوْلُ لَكُمْ" الآیہ फ़रमाना ब त़रीक़े तवाज़ोअ़ है। (مدارک وخازن وجمل وغیرہ) **114 :** और येही नबी का काम है तो मैं तुम्हें वोही दूंगा जिस का मुझे इज़्न होगा, वोही बताऊंगा जिस की इजाज़त होगी, वोही करूंगा जिस का मुझे ह़ुक्म मिला हो। **115 :** मोमिन व काफ़िर, आ़लिम व जाहिल। **116 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ार की एक जमाअ़त सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की ख़िदमत में आई तो उन्हों ने देखा कि ह़ुज़ूर के गिर्द ग़रीब सह़ाबा की एक जमाअ़त ह़ाज़िर है जो अदना दरजे के लिबास पहने हुए हैं, येह देख कर वोह कहने लगे कि हमें इन लोगों के पास बैठते शर्म आती है अगर आप इन्हें अपनी मजलिस से निकाल दें तो हम आप पर ईमान ले आएं और आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहें। ह़ुज़ूर ने इस को मन्ज़ूर न फ़रमाया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **117 :** सब का ह़िसाब अल्लाह पर है वोही तमाम ख़ल्क़ को रोज़ी देने वाला है उस के सिवा किसी के ज़िम्मे किसी का ह़िसाब नहीं, ह़ासिले मा'ना येह कि वोह ज़ईफ़ फ़ुक़रा जिन का ऊपर ज़िक्र हुवा आप के दरबार में क़ुर्ब पाने के मुस्तह़िक़ हैं उन्हें दूर न करना ही बजा है। **118 :** ब त़रीक़े ह़सद **119 :** कि उन्हें ईमान व हिदायत नसीब की बा वुजूदे कि वोह लोग फ़क़ीर ग़रीब हैं और हम रईस सरदार हैं। इस से उन का मत़लब अल्लाह तआ़ला पर ए'तिराज़ करना है कि ग़ुरबा

www.dawateislami.net

يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ

हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं तो उन से फ़रमाओ तुम पर सलाम तुम्हारे रब ने अपने ज़िम्मए करम पर रहमत लाज़िम कर ली है[120]

اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ

कि तुम में जो कोई नादानी से कुछ बुराई कर बैठे फिर इस के बा'द तौबा करे और संवर जाए तो बेशक अल्लाह

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۵۴﴾ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ

बख़्शने वाला मेहरबान है और इसी त़रह़ हम आयतों को मुफ़स्सल बयान फ़रमाते हैं[121] और इस लिये कि मुजरिमों का

ع ٦/٥

الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۵۵﴾ ع قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ

रस्ता ज़ाहिर हो जाए[122] तुम फ़रमाओ मुझे मन्अ़ किया गया है कि उन्हें पूजूं जिन को तुम अल्लाह के सिवा

اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّاۤ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَاۤ اَنَا مِنَ

पूजते हो[123] तुम फ़रमाओ मैं तुम्हारी ख़्वाहिश पर नहीं चलता[124] यूं हो तो मैं बहक जाऊं और राह

الْمُهْتَدِيْنَ ﴿۵۶﴾ قُلْ اِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ؕ مَا عِنْدِيْ

पर न रहूं तुम फ़रमाओ मैं तो अपने रब की त़रफ़ से रोशन दलील पर हूं[125] और तुम उसे झुटलाते हो मेरे पास नहीं

مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ

जिस की तुम जल्दी मचा रहे हो[126] हुक्म नहीं मगर अल्लाह का वोह ह़क़ फ़रमाता है और वोह सब से बेहतर

الْفٰصِلِيْنَ ﴿۵۷﴾ قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِيَ الْاَمْرُ

फ़ैसला करने वाला तुम फ़रमाओ अगर मेरे पास होती वोह चीज़ जिस की तुम जल्दी कर रहे हो[127] तो मुझ में

بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿۵۸﴾ وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ

तुम में काम ख़त्म हो चुका होता[128] और अल्लाह ख़ूब जानता है सितम गारों को और उसी के पास हैं कुन्जियां ग़ैब की

उमरा पर सब्क़त नहीं रखते तो अगर वोह ह़क़ होता जिस पर येह ग़ुरबा हैं तो वोह हम पर साबिक़ न होते। **120 :** अपने फ़ज़्लो करम से वा'दा फ़रमाया **121 :** ताकि ह़क़ ज़ाहिर हो और उस पर अ़मल किया जाए। **122 :** ताकि उस से इज्तिनाब किया जाए। **123 :** क्यूं कि येह अ़क़्लो नक़्ल दोनों के ख़िलाफ़ है। **124 :** या'नी तुम्हारा त़रीक़ा इत्तिबाए नफ़्स व ख़्वाहिशे हवा है, न कि इत्तिबाए दलील, इस लिये इख़्तियार करने के क़ाबिल नहीं। **125 :** और मुझे उस की मा'रिफ़त ह़ासिल है मैं जानता हूं कि उस के सिवा कोई मुस्तह़िक़े इबादत नहीं। रोशन दलील क़ुरआन शरीफ़ और मो'जिज़ात और तौह़ीद के बराहीने वाज़ेह़ा सब को शामिल है। **126 :** कुफ़्फ़ार इस्तिहज़ाअन हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा करते थे कि हम पर जल्दी अ़ज़ाब नाज़िल कराइये, इस आयत में उन्हें जवाब दिया गया और ज़ाहिर कर दिया गया कि हुज़ूर से येह सुवाल करना निहायत बे जा है। **127 :** या'नी अ़ज़ाब **128 :** मैं तुम्हें एक साअ़त की मोहलत न देता और तुम्हें रब का मुख़ालिफ़ देख कर बे दरंग हलाक कर डालता। लेकिन अल्लाह तआ़ला ह़लीम है उ़क़ूबत में जल्दी नहीं फ़रमाता।

www.dawateislami.net

لَا یَعْلَمُهَاۤ اِلَّا هُوَ ؕ وَ یَعْلَمُ مَا فِی الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ ؕ وَ مَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ

उन्हें वोही जानता है[129] और जानता है जो कुछ ख़ुश्की और तरी में है और जो पत्ता गिरता है

اِلَّا یَعْلَمُهَا وَ لَا حَبَّةٍ فِیْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَ لَا رَطْبٍ وَّ لَا یَابِسٍ اِلَّا فِیْ

वोह उसे जानता है और कोई दाना नहीं ज़मीन की अंधेरियों में और न कोई तर और न ख़ुश्क जो एक

كِتٰبٍ مُّبِیْنٍ ﴿۵۹﴾ وَ هُوَ الَّذِیْ یَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّیْلِ وَ یَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ

रोशन किताब में लिखा न हो[130] और वोही है जो रात को तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ करता है[131] और जानता है जो कुछ दिन

بِالنَّهَارِ ثُمَّ یَبْعَثُكُمْ فِیْهِ لِیُقْضٰۤى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَیْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ

में कमाओ फिर तुम्हें दिन में उठाता है कि ठहराई हुई मीआ़द पूरी हो[132] फिर उसी की त़रफ़ तुम्हें फिरना है[133] फिर

یُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۶۰﴾ ع وَ هُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَ یُرْسِلُ

वोह बता देगा जो कुछ तुम करते थे और वोही ग़ालिब है अपने बन्दों पर और तुम पर

عَلَیْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَ هُمْ

निगहबान भेजता है[134] यहां तक कि जब तुम में किसी को मौत आती है हमारे फ़िरिश्ते उस की रूह क़ब्ज़ करते हैं[135] और वोह

لَا یُفَرِّطُوْنَ ﴿۶۱﴾ ثُمَّ رُدُّوْۤا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ قف وَ هُوَ

क़ुसूर नहीं करते[136] फिर फेरे जाते हैं अपने सच्चे मौला **अल्लाह** की त़रफ़ सुनता है उसी का हुक्म है[137] और वोह

129 : तो जिसे वोह चाहे वोही ग़ैब पर मुत्तलअ़ हो सकता है बिग़ैर उस के बताए कोई ग़ैब नहीं जान सकता। (واحدی) **130 :** किताबे मुबीन से लौहे़ मह़फ़ूज़ मुराद है **अल्लाह** तआ़ला ने مَاكَانَ وَمَا يَكُوْنُ (जो कुछ हो चुका और आयिन्दा जो कुछ होगा तमाम) के उ़लूम उस में मक्तूब फ़रमाए। **131 :** तो तुम पर नींद मुसल्लत़ होती है और तुम्हारे तसर्रुफ़ात अपने ह़ाल पर बाक़ी नहीं रहते। **132 :** और उ़म्र अपनी इन्तिहा को पहुंचे। **133 :** आख़िरत में। इस आयत में بَعْث بَعْدَ الْمَوْت या'नी मरने के बा'द ज़िन्दा होने पर दलील ज़िक्र फ़रमाई गई, जिस त़रह़ रोज़मर्रा सोने के वक़्त एक त़रह़ की मौत तुम पर वारिद की जाती है जिस से तुम्हारे ह़वास मुअ़त्तल हो जाते हैं और चलना फिरना पकड़ना और बेदारी के अफ़्आ़ल सब मुअ़त्तल होते हैं इस के बा'द फिर बेदारी के वक़्त **अल्लाह** तआ़ला तमाम क़ुवा (त़ाक़तों) को उन के तसर्रुफ़ात अ़त़ा फ़रमाता है। येह दलीले बय्यिन है इस बात की, कि वोह ज़िन्दगानी के तसर्रुफ़ात बा'दे मौत अ़त़ा करने पर इसी त़रह़ क़ादिर है। **134 :** फ़िरिश्ते जिन को किरामन कातिबीन कहते हैं वोह बनी आदम की नेकी और बदी लिखते रहते हैं, हर आदमी के साथ दो फ़िरिश्ते हैं एक दाह्ने एक बाएं, नेकियां दाह्नी त़रफ़ का फ़िरिश्ता लिखता है और बदियां बाईं त़रफ़ का। बन्दों को चाहिये होशियार रहें और बदियों और गुनाहों से बचें क्यूं कि हर एक अ़मल लिखा जाता है और रोज़े क़ियामत वोह नामए आ'माल तमाम ख़ल्क़ के सामने पढ़ा जाएगा तो गुनाह कितनी रुस्वाई का सबब होंगे **अल्लाह** पनाह दे। (آمین ثم آمین) **135 :** इन फ़िरिश्तों से मुराद या तन्हा मलकुल मौत हैं इस सूरत में सीग़ए जम्अ़ ता'ज़ीम के लिये है या मलकुल मौत मअ़ उन फ़िरिश्तों के मुराद हैं जो उन के आ'वान (मुआ़विन व मददगार) हैं, जब किसी की मौत का वक़्त आता है मलकुल मौत ब हुक्मे इलाही अपने आ'वान को उस की रूह़ क़ब्ज़ करने का हुक्म देते हैं जब रूह़ ह़ल्क़ तक पहुंचती है तो ख़ुद क़ब्ज़ फ़रमाते हैं। (خازن) **136 :** और ता'मीले हुक्म में उन से कोताही वाक़ेअ़ नहीं होती और उन के अ़मल में सुस्ती और ताख़ीर राह नहीं पाती, अपने फ़राइज़ ठीक वक़्त पर अदा करते हैं। **137 :** और उस रोज़ उस के सिवा कोई हुक्म करने वाला नहीं।

www.dawateislami.net

اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿٦٢﴾ قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ

सब से जल्द हिसाब करने वाला[138] तुम फ़रमाओ वोह कौन है जो तुम्हें नजात देता है जंगल और दरिया की आफ़तों से

تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّ خُفْيَةً ۚ لَئِنْ اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ

जिसे पुकारते हो गिड़गिड़ा कर और आहिस्ता कि अगर वोह हमें इस से बचावे तो हम ज़रूर

الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾ قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَ مِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ

एह़सान मानेंगे[139] तुम फ़रमाओ **अल्लाह** तुम्हें नजात देता है इस से और हर बेचैनी से फिर तुम

تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰۤى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ

शरीक ठहराते हो[140] तुम फ़रमाओ वोह क़ादिर है कि तुम पर अ़ज़ाब भेजे तुम्हारे ऊपर से

اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّ يُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ

या तुम्हारे पाउं के तले से या तुम्हें भिड़ा दे मुख़्तलिफ़ गुरोह कर के और एक को दूसरे की सख़्ती

بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَ كَذَّبَ بِهٖ

चखाए देखो हम क्यूंकर त़रह़ त़रह़ से आयतें बयान करते हैं कि कहीं उन को समझ हो[141] और उसे[142] झुटलाया

قَوْمُكَ وَ هُوَ الْحَقُّ ؕ قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ﴿٦٦﴾ لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ز

तुम्हारी क़ौम ने और येही ह़क़ है तुम फ़रमाओ मैं तुम पर कुछ कड़ोड़ा (निगहबान) नहीं[143] हर ख़बर का एक वक़्त मुक़र्रर है[144]

138 : क्यूं कि उस को सोचने, जांचने, शुमार करने की ह़ाजत नहीं जिस में देर हो। **139 :** इस आयत में कुफ़्फ़ार को तम्बीह की गई कि ख़ुश्की और तरी के सफ़रों में जब वोह मुब्तलाए आफ़ात हो कर परेशान होते हैं और ऐसे शदाइद व अहवाल पेश आते हैं जिन से दिल कांप जाते हैं और ख़त़रात क़ुलूब को मुज़्तरिब और बेचैन कर देते हैं उस वक़्त बुत परस्त भी बुतों को भूल जाता है और **अल्लाह** तआ़ला ही से दुआ़ करता है उसी की जनाब में तज़र्रोअ़ व ज़ारी करता है और कहता है कि इस मुसीबत से अगर तू ने नजात दी तो मैं शुक्र गुज़ार होउंगा और तेरा ह़क़्क़े ने'मत बजा लाऊंगा। **140 :** और बजाए शुक्र गुज़ारी के ऐसी बड़ी ना शुक्री करते हो और येह जानते हुए कि बुत निकम्मे हैं किसी काम के नहीं फिर उन्हें **अल्लाह** का शरीक करते हो कितनी बड़ी गुमराही है। **141 :** मुफ़स्सिरीन का इस में इख़्तिलाफ़ है कि इस आयत से कौन लोग मुराद हैं ? एक जमाअ़त ने कहा कि इस से उम्मते मुह़म्मदिय्यह मुराद है और आयत इन्हीं के ह़क़ में नाज़िल हुई। बुख़ारी की ह़दीस में है कि जब येह नाज़िल हुवा कि वोह क़ादिर है तुम पर अ़ज़ाब भेजे तुम्हारे ऊपर से तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तेरी ही पनाह मांगता हूं और जब येह नाज़िल हुवा कि या तुम्हारे पाउं के नीचे से तो फ़रमाया : मैं तेरी ही पनाह मांगता हूं और जब येह नाज़िल हुवा या तुम्हें भिड़ावे मुख़्तलिफ़ गुरोह कर के और एक को दूसरे की सख़्ती चखाए तो फ़रमाया : येह आसान है। मुस्लिम की ह़दीस शरीफ़ में है कि एक रोज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने मस्जिदे बनी मुआ़विया में दो रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमाई और इस के बा'द त़वील दुआ़ की, फिर सह़ाबा की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : मैं ने अपने रब से तीन सुवाल किये उन में से सिर्फ़ दो क़बूल फ़रमाए गए, एक सुवाल तो येह था कि मेरी उम्मत को क़ह़त़े आ़म से हलाक न फ़रमाए येह क़बूल हुवा, एक येह था कि इन्हें ग़र्क़ से अ़ज़ाब न फ़रमाए येह भी क़बूल हुवा, तीसरा सुवाल येह था कि इन में बाहम जंगो जिदाल न हो येह क़बूल नहीं हुवा। **142 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ को या नुज़ूले अ़ज़ाब को **143 :** मेरा काम हिदायत है क़ुलूब की ज़िम्मेदारी मुझ पर नहीं। **144 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने जो ख़बरें दीं उन के लिये वक़्त मुअ़य्यन हैं उन का वुक़ूअ़ ठीक उसी वक़्त होगा।

وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَ اِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ

और अन्क़रीब जान जाओगे और ऐ सुनने वाले जब तू उन्हें देखे जो हमारी आयतों में पड़ते हैं[145] तो उन से मुंह

عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ؕ وَ اِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا

फेर ले[146] जब तक और बात में पड़ें और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो

تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٨﴾ وَ مَا عَلَى الَّذِيْنَ

याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ और परहेज़ गारों पर

يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّ لٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٦٩﴾

उन के हिसाब से कुछ नहीं[147] हां नसीहत देना शायद वोह बाज़ आएं[148]

وَ ذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّ لَهْوًا وَّ غَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَ

और छोड़ दे उन को जिन्हों ने अपना दीन हंसी खेल बना लिया और उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी ने फ़रेब दिया और

ذَكِّرْ بِهٖۤ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖۗ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ

क़ुरआन से नसीहत दो[149] कि कहीं कोई जान अपने किये पर पकड़ी न जाए[150] **अल्लाह** के सिवा न उस का कोई हिमायती हो

وَّ لَا شَفِيْعٌ ۚ وَ اِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ؕ اُولٰٓىِٕكَ الَّذِيْنَ

न सिफ़ारिशी और अगर अपने इवज़ सारे बदले दे तो उस से न लिये जाएं येह हैं[151] वोह जो

اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّ عَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا

अपने किये पर पकड़े गए उन्हें पीने को खौलता पानी और दर्दनाक अ़ज़ाब बदला उन के

يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ ع قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَ لَا يَضُرُّنَا وَ ع ٨ ١٤

कुफ़्र का तुम फ़रमाओ[152] क्या हम **अल्लाह** के सिवा उस को पूजें जो हमारा न भला करे न बुरा[153] और

145 : ता'न, तश्नीअ़, इस्तिहज़ा के साथ 146 : और उन की हम नशीनी तर्क कर। **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि बे दीनों की जिस मजलिस में दीन का एहतिराम न किया जाता हो मुसल्मान को वहां बैठना जाइज़ नहीं। इस से साबित हो गया कि कुफ़्फ़ार और बे दीनों के जल्से जिन में वोह दीन के ख़िलाफ़ तक़रीरें करते हैं उन में जाना सुनने के लिये शिर्कत करना जाइज़ नहीं और रद व जवाब के लिये जाना मुजालसत (शिर्कत करना) नहीं बल्कि इज़्हारे हक़ है वोह मम्नूअ़ नहीं जैसा कि अगली आयत से ज़ाहिर है। 147 : या'नी ता'न व इस्तिहज़ा करने वालों के गुनाह उन्हीं पर हैं, उन्हीं से इस का हिसाब होगा, परहेज़ गारों पर नहीं। **शाने नुज़ूल :** मुसल्मानों ने कहा था कि हमें गुनाह का अन्देशा है जब कि हम उन्हें छोड़ दें और मन्अ़ न करें इस पर येह आयत नाज़िल हुई। 148 **मस्अला :** इस आयत से मा'लूम हुवा कि पन्दो नसीहत और इज़्हारे हक़ के लिये उन के पास बैठना जाइज़ है। 149 : और अहकामे शरइय्या बताओ। 150 : और अपने जराइम के सबब अ़ज़ाबे जहन्नम में गिरिफ़्तार न हो। 151 : दीन को हंसी और खेल बनाने वाले और दुन्या के मफ़्तून (शैदाई) 152 : ऐ मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ! उन मुश्रिकीन से जो अपने बाप दादा के दीन की दा'वत देते हैं। 153 : और उस में कोई क़ुदरत नहीं।

www.dawateislami.net

نُرَدُّ عَلٰۤی اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِی اسْتَهْوَتْهُ الشَّیٰطِیْنُ فِی

उलटे पाउं पलटा दिये जाएं बा'द इस के कि अल्लाह ने हमें राह दिखाई[154] उस की त़रह जिसे शैत़ानों ने

الْاَرْضِ حَیْرَانَ ۪ لَهٗۤ اَصْحٰبٌ یَّدْعُوْنَهٗۤ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ؕ قُلْ اِنَّ

ज़मीन में राह भुला दी[155] हैरान है उस के रफ़ीक़ उसे राह की त़रफ़ बुला रहे हैं कि इधर आ तुम फ़रमाओ कि

هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَ اُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۷۱﴾ وَ اَنْ

अल्लाह ही की हिदायत हिदायत है[156] और हमें हुक्म है कि हम उस के लिये गरदन रख दें[157] जो रब है सारे जहान का और येह कि

اَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اتَّقُوْهُ ؕ وَ هُوَ الَّذِیْۤ اِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۷۲﴾ وَ هُوَ الَّذِیْ

नमाज़ क़ाइम रखो और उस से डरो और वोही है जिस की त़रफ़ तुम्हें उठना है और वोही है जिस ने

الثلثة

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ وَ یَوْمَ یَقُوْلُ كُنْ فَیَكُوْنُ ؕ۬ قَوْلُهُ

आस्मान व ज़मीन ठीक बनाए[158] और जिस दिन फ़ना हुई हर चीज़ को कहेगा हो जा वोह फ़ौरन हो जाएगी उस की बात

الْحَقُّ ؕ وَ لَهُ الْمُلْكُ یَوْمَ یُنْفَخُ فِی الصُّوْرِ ؕ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِ ؕ

सच ही है और उसी की सल्त़नत है जिस दिन सूर फूंका जाएगा[159] हर छुपे और ज़ाहिर का जानने वाला

وَ هُوَ الْحَكِیْمُ الْخَبِیْرُ ﴿۷۳﴾ وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِیْمُ لِاَبِیْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ

और वोही है हिक्मत वाला ख़बरदार और याद करो जब इब्राहीम ने अपने बाप[160] आज़र से कहा क्या तुम

154 : और इस्लाम और तौह़ीद की ने'मत अ़त़ा फ़रमाई और बुत परस्ती के बद तरीन वबाल से बचाया। **155 :** इस आयत में ह़क़ व बात़िल की दा'वत देने वालों की एक तम्सील बयान फ़रमाई गई कि जिस त़रह मुसाफ़िर अपने रफ़ीक़ों के साथ था जंगल में भूतों और शैत़ानों ने उस को रस्ता बहका दिया और कहा मन्ज़िले मक़्सूद की येही राह है और उस के रफ़ीक़ उस को राहे रास्त की त़रफ़ बुलाने लगे वोह ह़ैरान रह गया किधर जाए ! अन्जाम उस का येही होगा कि अगर वोह भूतों की राह पर चल दे तो हलाक हो जाएगा और रफ़ीक़ों का कहा माने तो सलामत रहेगा और मन्ज़िल पर पहुंच जाएगा। येही ह़ाल उस शख़्स का है जो त़रीक़ए इस्लाम से बहका और शैत़ान की राह चला मुसल्मान उस को राहे रास्त की त़रफ़ बुलाते हैं अगर इन की बात मानेगा राह पाएगा वरना हलाक हो जाएगा। **156 :** या'नी जो त़रीक़ अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के लिये वाज़ेह़ फ़रमाया और जो दीन इन के लिये मुक़र्रर किया वोही हिदायत व नूर है और जो उस के सिवा है वोह दीन बात़िल है। **157 :** और उसी की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी करें और ख़ास उसी की इबादत करें। **158 :** जिन से उस की क़ुदरते कामिला और उस का इल्मे मुह़ीत़ और उस की ह़िक्मत व सन्अ़त ज़ाहिर है। **159 :** कि नाम को भी कोई सल्त़नत का दा'वा करने वाला न होगा। तमाम जबाबिरा फ़राइना (ज़ालिमो जाबिर बादशाह) और सब दुन्या की सल्त़नत का ग़ुरूर करने वाले देखेंगे कि दुन्या में जो वोह सल्त़नत का दा'वा रखते थे वोह बात़िल था। **160 :** क़ामूस में है कि आज़र ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के चचा का नाम है। इमाम अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी ने मसालिकुल ह़ुनफ़ाअ में भी ऐसा ही लिखा है। चचा को बाप कहना तमाम ममालिक में मा'मूल है बिल ख़ुसूस अ़रब में। क़ुरआने करीम में है : ''نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَ اِلٰهَ اٰبَآىٕكَ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِیْلَ وَ اِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا'' इस में ह़ज़रते इस्माईल को ह़ज़रते या'क़ूब के आबा में ज़िक्र किया गया है बा वुजूदे कि आप अ़म (चचा) हैं। ह़दीस शरीफ़ में भी ह़ज़रत सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ को اَبٌ फ़रमाया। चुनान्चे इर्शाद किया : ''رُدُّوْا عَلَیَّ اَبِیْ'' और यहां अबी से ह़ज़रते अ़ब्बास मुराद हैं। (مفردات راغب وکبیر وغیرہ)

اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّیْۤ اَرٰىكَ وَ قَوْمَكَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿٧٤﴾ وَ كَذٰلِكَ

बुतों को ख़ुदा बनाते हो बेशक मैं तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में पाता हूं[161] और इसी तरह

نُرِیْۤ اِبْرٰهِیْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لِیَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِیْنَ ﴿٧٥﴾

हम इब्राहीम को दिखाते हैं सारी बादशाही आस्मानों और ज़मीन की[162] और इस लिये कि वोह ऐनुल यक़ीन वालों में हो जाए[163]

فَلَمَّا جَنَّ عَلَیْهِ الَّیْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَبِّیْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ قَالَ لَاۤ

फिर जब उन पर रात का अंधेरा आया एक तारा देखा[164] बोले इसे मेरा रब ठहराते हो फिर जब वोह डूब गया बोले मुझे

اُحِبُّ الْاٰفِلِیْنَ ﴿٧٦﴾ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّیْ ۚ فَلَمَّاۤ اَفَلَ

ख़ुश नहीं आते डूबने वाले फिर जब चांद चमकता देखा बोले इसे मेरा रब बताते हो फिर जब वोह डूब गया

161 : येह आयत मुश्रिकीने अ़रब पर हुज्जत है जो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को मुअ़ज़्ज़म जानते थे और उन की फ़ज़ीलत के मो'तरिफ़ थे, उन्हें दिखाया जाता है कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام बुत परस्ती को कितना बड़ा ऐब और गुमराही बताते हैं अगर तुम उन्हें मानते हो तो बुत परस्ती तुम भी छोड़ दो। **162 :** या'नी जिस त़रह़ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को दीन में बीनाई अ़त़ा फ़रमाई ऐसे ही उन्हें आस्मानों और ज़मीन के मुल्क दिखाते हैं। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया इस से आस्मानों और ज़मीन की ख़ल्क़ मुराद है। मुजाहिद और सईद बिन जुबैर कहते हैं कि आयाते समावातो अर्ज़ (ज़मीन व आस्मान के अ़जाइबात) मुराद हैं। येह इस त़रह़ कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को सख़्रा (एक चट्टान) पर खड़ा किया गया और आप के लिये समावात मक्शूफ़ किये (खोल दिये) गए, यहां तक कि आप ने अ़र्शो कुर्सी और आस्मानों के तमाम अ़जाइब और जन्नत में अपने मक़ाम को मुआ़यना फ़रमाया, आप के लिये ज़मीन कश्फ़ फ़रमा दी गई यहां तक कि आप ने सब से नीचे की ज़मीन तक नज़र की और ज़मीनों के तमाम अ़जाइब देखे। मुफ़स्सिरीन का इस में इख़्तिलाफ़ है कि येह रूयत ब चश्मे बात़िन थी या ब चश्मे सर। (درمنثور وخازن وغیرہ) **163 :** क्यूं कि हर ज़ाहिर व मख़्फ़ी चीज़ उन के सामने कर दी गई और ख़ल्क़ के आ'माल में से कुछ भी उन से न छुपा रहा। **164 :** उ़लमाए तफ़्सीर और अस्ह़ाबे अख़्बारो सियर का बयान है कि नमरूद इब्ने कन्आ़न बड़ा जाबिर बादशाह था सब से पहले इसी ने ताज सर पर रखा येह बादशाह लोगों से अपनी परस्तिश कराता था, काहिन और मुनज्जिम (नुजूमी) कसरत से इस के दरबार में ह़ाज़िर रहते थे। नमरूद ने ख़्वाब देखा कि एक सितारा त़ुलूअ़ हुवा है, उस की रोशनी के सामने आफ़्ताब महताब बिल्कुल बे नूर हो गए, इस से वोह बहुत ख़ौफ़ज़दा हुवा काहिनों से ता'बीर दरयाफ़्त की, उन्हों ने कहा : इस साल तेरी क़लम रव (सल्तनत) में एक फ़रज़न्द पैदा होगा जो तेरे ज़वाले मुल्क का बाइ़स होगा और तेरे दीन वाले उस के हाथ से हलाक होंगे। येह ख़बर सुन कर वोह परेशान हुवा और उस ने हुक्म दे दिया कि जो बच्चा पैदा हो क़त्ल कर डाला जाए और मर्द औ़रतों से अ़लाह़दा रहें और इस की निगहबानी के लिये एक मह्कमा क़ाइम कर दिया गया। तक़्दीराते इलाहिय्यह को कौन टाल सकता है ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की वालिदए माजिदा ह़ामिला हुईं और काहिनों ने नमरूद को इस की भी ख़बर दी कि वोह बच्चा ह़म्ल में आ गया लेकिन चूंकि ह़ज़रत की वालिदा साहिबा की उ़म्र कम थी उन का ह़म्ल किसी त़रह़ पहचाना ही न गया, जब ज़मानए विलादत क़रीब हुवा तो आप की वालिदा उस तहख़ाने में चली गईं जो आप के वालिद ने शहर से दूर खोद कर तय्यार किया था, वहां आप की विलादत हुई और वहीं आप रहे, पथ्थरों से उस तहख़ाने का दरवाज़ा बन्द कर दिया जाता था रोज़ाना वालिदा साहिबा दूध पिला आती थीं और जब वहां पहुंचती थीं तो देखती थीं कि आप अपनी सरे अंगुश्त चूस रहे हैं और उस से दूध बरआमद होता है आप बहुत जल्द बढ़ते थे एक महीने में इतना जितने दूसरे बच्चे एक साल में, इस में इख़्तिलाफ़ है कि आप तहख़ाने में कितना अ़र्सा रहे, बा'ज़ कहते हैं सात बरस, बा'ज़ तेरह बरस, बा'ज़ सतरह बरस। येह **मस्अला** यक़ीनी है कि अम्बिया हर ह़ाल में मा'सूम होते हैं और वोह अपनी इब्तिदाए हस्ती से तमाम अवक़ात वुजूद में आ़रिफ़ होते हैं। एक रोज़ ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपनी वालिदा से दरयाफ़्त फ़रमाया : मेरा रब (पालने वाला) कौन है? उन्हों ने कहा : मैं। फ़रमाया : तुम्हारा रब कौन है? उन्हों ने कहा : तुम्हारे वालिद। फ़रमाया : उन का रब कौन है? इस पर वालिदा ने कहा : ख़ामोश रहो और अपने शोहर से जा कर कहा कि जिस लड़के की निस्बत येह मश्हूर है कि वोह ज़मीन वालों का दीन बदल देगा वोह तुम्हारा फ़रज़न्द ही है और येह गुफ़्तगू बयान की। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْهِ السَّلَام ने इब्तिदा ही से तौह़ीद की ह़िमायत और अ़क़ाइदे कुफ़्रिय्या का इब्त़ाल शुरूअ़ फ़रमा दिया और जब एक सूराख़ की राह से शब के वक़्त आप ने ज़ोहरा या मुश्तरी सितारे को देखा तो इक़ामते हुज्जत शुरूअ़ कर दी क्यूं कि उस ज़माने के लोग बुत और कवाकिब की परस्तिश करते थे तो आप ने एक निहायत नफ़ीस और दिल नशीन पैराए में उन्हें नज़र व इस्तिद्लाल की त़रफ़ राहनुमाई

قَالَ لَئِن لَّمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ ﴿٧٧﴾ فَلَمَّا

कहा अगर मुझे मेरा रब हिदायत न करता तो मैं भी इन्हीं गुमराहों में होता[165] फिर जब

رَأَى الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هَٰذَا رَبِّي هَٰذَا أَكْبَرُ ۚ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ

सूरज जग मगाता देखा बोले इसे मेरा रब कहते हो[166] येह तो उन सब से बड़ा है फिर जब वोह डूब गया कहा

يَا قَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٧٨﴾ إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ

ऐ क़ौम मैं बेज़ार हूं उन चीज़ों से जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो[167] मैं ने अपना मुंह उस की त़रफ़ किया जिस ने

السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٧٩﴾ وَحَاجَّهُ

आस्मान व ज़मीन बनाए एक उसी का हो कर[168] और मैं मुश्रिकों में नहीं और उन की क़ौम उन से

قَوْمُهُ ۚ قَالَ أَتُحَاجُّونِّي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَانِ ۚ وَلَا أَخَافُ مَا

झगड़ने लगी कहा क्या **अल्लाह** के बारे में मुझ से झगड़ते हो वोह तो मुझे राह बता चुका[169] और मुझे उन का डर नहीं

تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَن يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا ۗ وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۗ

जिन्हें तुम शरीक बताते हो[170] हां जो मेरा ही रब कोई बात चाहे[171] मेरे रब का इ़ल्म हर चीज़ को मुह़ीत़ है

أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٨٠﴾ وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ

तो क्या तुम नसीह़त नहीं मानते और मैं तुम्हारे शरीकों से क्यूंकर डरूं[172] और तुम नहीं डरते कि तुम ने

أَشْرَكْتُم بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا ۚ فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ

अल्लाह का शरीक उस को ठहराया जिस की तुम पर उस ने कोई सनद न उतारी तो दोनों गुरौहों में

की जिस से वोह इस नतीजे पर पहुंचे कि आ़लम बि तमामिही ह़ादिस है, इलाह नहीं हो सकता, वोह ख़ुद मूजिद व मुदब्बिर का मोह़ताज है जिस के क़ुदरतो इख़्तियार से इस में तग़य्युर होते रहते हैं। **165 :** इस में क़ौम को तम्बीह है कि जो क़मर को इलाह ठहराए वोह गुमराह है क्यूं कि उस का एक ह़ाल से दूसरे ह़ाल की त़रफ़ मुन्तक़िल होना दलीले हुदूसो इम्कान है। **166 :** शम्स मुअन्नस ग़ैर ह़क़ीक़ी है इस के लिये मुज़क्कर मुअन्नस के दोनों सीग़े इस्ति'माल किये जा सकते हैं, यहां ''هٰذَا'' मुज़क्कर लाया गया इस में ता'लीमे अदब है कि लफ़्ज़ रब की रिआ़यत के लिये लफ़्ज़ तानीस न लाया गया, इसी लिहाज़ से **अल्लाह** तआ़ला की सिफ़त में अ़ल्लाम आता है न कि अ़ल्लामा। **167 :** ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने साबित कर दिया कि सितारों में छोटे से बड़े तक कोई भी रब होने की सलाहिय्यत नहीं रखता इन का इलाह होना बात़िल है और क़ौम जिस शिर्क में मुब्तला है आप ने उस से बेज़ारी का इज़्हार किया और इस के बा'द दीने ह़क़ का बयान फ़रमाया जो आगे आता है। **168 :** या'नी इस्लाम के सिवा बाक़ी तमाम अद्यान से जुदा रह कर। **मस्अला :** इस से मा'लूम हुवा कि दीने ह़क़ का क़ियाम व इस्तिह़काम जब ही हो सकता है जब कि तमाम अद्याने बात़िला से बेज़ारी हो। **169 :** अपनी तौह़ीद व मा'रिफ़त की **170 :** क्यूं कि वोह बेजान बुत हैं न ज़रर दे सकते हैं न नफ़अ़ पहुंचा सकते हैं उन से क्या डरना। येह आप ने मुश्रिकीन से जवाब में फ़रमाया था जिन्हों ने आप से कहा था कि बुतों से डरो, उन के बुरा कहने से कहीं आप को कुछ नुक़्सान न पहुंच जाए। **171 :** वोह होगी क्यूं कि मेरा रब क़ादिरे मुत्लक़ है। **172 :** जो बेजान जमाद और आ़जिज़े मह़ज़ हैं।

www.dawateislami.net

اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٨١﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا

अमान का ज़ियादा सज़ावार कौन है[173] अगर तुम जानते हो वोह जो ईमान लाए और अपने ईमान में किसी

اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٨٢﴾ وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ

नाहक़ की आमेज़िश न की उन्हीं के लिये अमान है और वोही राह पर हैं और येह हमारी दलील है

اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ۭ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَاۗءُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ

कि हम ने इब्राहीम को उस की क़ौम पर अ़ता फ़रमाई हम जिसे चाहें दरजों बुलन्द करें[174] बेशक तुम्हारा रब इल्मो हिक्मत

عَلِيْمٌ ﴿٨٣﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۭ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوْحًا هَدَيْنَا

वाला है और हम ने उन्हें इस्हाक़ और या'क़ूब अ़ता किये उन सब को हम ने राह दिखाई और उन से पहले नूह को

مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَ

राह दिखाई और उस की औलाद में से दावूद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और

هٰرُوْنَ ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٤﴾ ۙ وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَ

हारून को और हम ऐसा ही बदला देते हैं नेकोकारों को और ज़करिय्या और यहूया और ईसा और

اِلْيَاسَ ۭ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٥﴾ ۙ وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا ۭ

इल्यास को येह सब हमारे क़ुर्ब के लाइक़ हैं और इस्माईल और यसअ़ और यूनुस और लूत़ को

وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٦﴾ ۙ وَمِنْ اٰبَاۗىِٕهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ وَ

और हम ने हर एक को उस के वक़्त में सब पर फ़ज़ीलत दी[175] और कुछ उन के बाप दादा और औलाद और भाइयों में से बा'ज़ को[176] और

173 : मुवह्हिद (तौह़ीद का क़ाइल) या मुश्रिक, **174 :** इल्मो अ़क़्ल व फ़हमो फ़ज़ीलत के साथ जैसे कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के दरजे बुलन्द फ़रमाए दुन्या में इल्मो हिक्मत व नुबुव्वत के साथ और आख़िरत में क़ुर्ब व सवाब के साथ। **175 :** नुबुव्वत व रिसालत के साथ। **मस्अला :** इस आयत से इस पर सनद लाई जाती है कि अम्बिया मलाएका से अफ़्ज़ल हैं क्यूं कि आ़लम **अल्लाह** के सिवा तमाम मौजूदात को शामिल है फ़िरिश्ते भी इस में दाख़िल हैं तो जब तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी तो मलाएका पर भी फ़ज़ीलत साबित हो गई। यहां **अल्लाह** तआ़ला ने अठ्ठारह अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का ज़िक्र फ़रमाया और इस ज़िक्र में तरतीब न ज़माने के ए'तिबार से है न फ़ज़ीलत के न "वाव" तरतीब का मुक़्तज़ी, लेकिन जिस शान से कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के अस्मा ज़िक्र फ़रमाए गए इस में एक अ़जीब लत़ीफ़ा है वोह येह कि **अल्लाह** तआ़ला ने अम्बिया की हर जमाअ़त को एक ख़ास त़रह़ की करामत व फ़ज़ीलत के साथ मुमताज़ फ़रमाया तो ह़ज़रते नूह़ व इब्राहीम व इस्ह़ाक़ व या'क़ूब का अव्वल ज़िक्र किया क्यूं कि येह अम्बिया के उसूल (आबाओ अज्दाद) हैं या'नी इन की औलाद में ब कसरत अम्बिया हुए जिन के अन्साब इन्हीं की त़रफ़ रुजूअ़ करते हैं। नुबुव्वत के बा'द मरातिबे मो'तबरा में से मुल्क व इख़्तियार व सल्त़नत व इक़्तिदार है **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते दावूद व सुलैमान को इस का ह़ज़्ज़े वाफ़िर (बहुत ह़िस्सा) दिया। और मरातिबे रफ़ीआ़ में से मुसीबतो बला पर साबिर रहना है, **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते अय्यूब को इस के साथ मुमताज़ फ़रमाया, फिर मुल्क व सब्र के दोनों मर्तबे ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को इनायत किये कि आप ने शिद्दतो बला पर मुद्दतों सब्र फ़रमाया फिर **अल्लाह** तआ़ला ने नुबुव्वत के साथ मुल्के मिस्र अ़ता किया। कस्रते मो'जिज़ात व कुव्वते बराहीन भी मरातिबे मो'तबरा में से हैं, **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा व हारून को इस के साथ

www.dawateislami.net

اجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۸۷﴾ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ

हम ने उन्हें चुन लिया और सीधी राह दिखाई येह **अल्लाह** की हिदायत है

بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۸۸﴾

कि अपने बन्दों में जिसे चाहे दे और अगर वोह शिर्क करते तो ज़रूर उन का किया अकारत जाता

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا

येह हैं जिन को हम ने किताब और हुक्म और नुबुव्वत अ़ता की तो अगर येह लोग[177] इस से

هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿۸۹﴾ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى

मुन्किर हों तो हम ने इस के लिये एक ऐसी क़ौम लगा रखी है जो इन्कार वाली नहीं[178] येह हैं जिन को **अल्लाह** ने

اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى

हिदायत की तो तुम उन्हीं की राह चलो[179] तुम फ़रमाओ मैं कुरआन पर तुम से कोई उजरत नहीं मांगता वोह तो नहीं मगर नसीहत

ع ۱۰ لِلْعٰلَمِيْنَ ﴿۹۰﴾ ع وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖۤ اِذْ قَالُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى

सारे जहान को[180] और यहूद ने **अल्लाह** की क़द्र न जानी जैसी चाहिये थी[181] जब बोले **अल्लाह** ने किसी आदमी पर

بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّ

कुछ नहीं उतारा तुम फ़रमाओ किस ने उतारी वोह किताब जो मूसा लाए थे रोशनी और

मुशर्रफ़ किया। ज़ोहद व तर्के दुन्या भी मरातिबे मो'तबरा में से है, हज़रते ज़करिय्या व यह्या व ईसा व इल्यास को इस के साथ मख़्सूस फ़रमाया। इन हज़रात के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ने उन अम्बिया का ज़िक्र फ़रमाया कि जिन के न मुत्तबिईन बाक़ी रहे न उन की शरीअ़त जैसे कि हज़रते इस्माईल, यसअ़, यूनुस, लूत़ عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام। इस शान से अम्बिया का ज़िक्र फ़रमाने में उन की करामतों और ख़ुसूसिय्यतों का एक अ़जीब लत़ीफ़ा नज़र आता है। **176 :** हम ने फ़ज़ीलत दी **177 :** या'नी अहले मक्का **178 :** इस क़ौम से या अन्सार मुराद हैं या मुहाजिरीन या तमाम अस्हाबे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم या हुज़ूर पर ईमान लाने वाले सब लोग। **फ़ाएदा :** इस आयत में दलालत है कि **अल्लाह** तआ़ला अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुसरत फ़रमाएगा और आप के दीन को कुव्वत देगा और इस को तमाम अद्यान पर ग़ालिब करेगा। चुनान्चे ऐसा ही हुवा और येह ग़ैबी ख़बर वाक़ेअ़ हो गई। **179 मस्अला :** उ़लमाए दीन ने इस आयत से येह मस्अला साबित किया है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم तमाम अम्बिया से अफ़्ज़ल हैं क्यूं कि ख़िसाले कमाल व औसाफ़े शरफ़ जो जुदा जुदा अम्बिया को अ़ता फ़रमाए गए थे नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के लिये सब को जम्अ़ फ़रमा दिया और आप को हुक्म दिया "فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ" (तो तुम इन्हीं की राह चलो) तो जब आप तमाम अम्बिया के औसाफ़े कमालिया के जामेअ़ हैं तो बेशक सब से अफ़्ज़ल हुए। **180 :** इस आयत से साबित हुवा कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم तमाम ख़ल्क़ की त़रफ़ मब्ऊ़स हैं और आप की दा'वत तमाम ख़ल्क़ को आ़म और कुल जहान आप की उम्मत। (خازن) **181 :** और उस की मा'रिफ़त से महरूम रहे और अपने बन्दों पर उस के जो रह़मतो करम है उस को न जाना। **शाने नुज़ूल :** यहूद की एक जमाअ़त अपने ह़िबरुल अह़बार (बडे आ़लिम पेश्वा) मालिक इब्ने सैफ़ को ले कर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से मुजादला करने आई, सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया : मैं तुझे उस परवर्दगार की क़सम देता हूं जिस ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर तौरैत नाज़िल फ़रमाई। क्या तौरैत में तू ने येह देखा है "اِنَّ اللّٰهَ يَبْغَضُ الْحَبْرَ السَّمِيْنَ" या'नी **अल्लाह** को मोटा आ़लिम मबग़ूज़ है, कहने लगा : हां ! येह तौरैत में है, हुज़ूर ने फ़रमाया : तू मोटा आ़लिम ही तो है। इस पर वोह ग़ज़ब नाक हो कर कहने लगा कि **अल्लाह** ने किसी आदमी पर कुछ नहीं उतारा, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इस में फ़रमाया गया किस ने उतारी वोह किताब जो मूसा लाए थे ? तो वोह ला जवाब हुवा और यहूद उस से बरहम हुए और उस को झिड़कने लगे और उस को ह़िब्र के ओ़हदे से मा'ज़ूल कर दिया। (مدارک وخازن)

هُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَ

लोगों के लिये हिदायत जिस के तुम ने अलग अलग काग़ज़ बना लिये ज़ाहिर करते हो[182] और बहुत सा छुपा लेते हो[183] और

عُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ

तुम्हें वोह सिखाया जाता है[184] जो न तुम को मा'लूम था न तुम्हारे बाप दादा को **अल्लाह** कहो[185] फिर उन्हें छोड़ दो उन की

خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿۹۱﴾ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ

बेहूदगी में खेलता[186] और येह है बरकत वाली किताब कि हम ने उतारी[187] तस्दीक़ फ़रमाती उन किताबों की

بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ

जो आगे थीं और इस लिये कि तुम डर सुनाओ सब बस्तियों के सरदार को[188] और जो कोई सारे जहान में इस के गिर्द हैं और वोह जो आख़िरत पर

بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿۹۲﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ

ईमान लाते हैं[189] इस किताब पर ईमान लाते हैं और अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन

مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّ

जो **अल्लाह** पर झूट बांधे[190] या कहे मुझे वह्य हुई और उसे कुछ वह्य न हुई[191] और

مَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ

जो कहे अभी मैं उतारता हूं ऐसा जैसा ख़ुदा ने उतारा[192] और कभी तुम देखो जिस वक़्त ज़ालिम

182 : उन में से बा'ज़ को जिस का इज़्हार अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ समझते हो **183 :** जो तुम्हारी ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ करते हैं जैसे कि तौरैत के वोह मज़ामीन जिन में सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ना'त व सिफ़त मज़्कूर है। **184 :** सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ता'लीम और क़ुरआने करीम से **185 :** या'नी जब वोह उस का जवाब न दे सकें कि वोह किताब किस ने उतारी तो आप फ़रमा दीजिये **अल्लाह** ने **186 :** क्यूं कि जब आप ने हुज्जत क़ाइम कर दी और इन्ज़ार व नसीहत निहायत को पहुंचा दी और उन के लिये जाए उज़्र न छोड़ी इस पर भी वोह बाज़ न आएं तो उन्हें उन की बेहूदगी में छोड़ दीजिये, येह कुफ़्फ़ार के हक़ में वईद व तहदीद है। **187 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़। **188 :** اُمُّ الْقُرٰى मक्कए मुकर्रमा है क्यूं कि वोह तमाम ज़मीन वालों का क़िब्ला है। **189 :** और क़ियामत व आख़िरत और मरने के बा'द उठने का यक़ीन रखते हैं और अपने अन्जाम से ग़ाफ़िल और बे ख़बर नहीं हैं। **190 :** और नुबुव्वत का झूटा दा'वा करे। **191 शाने नुज़ूल :** येह आयत मुसैलमा कज़्ज़ाब के बारे में नाज़िल हुई जिस ने यमामा अ़लाक़ए यमन में नुबुव्वत का झूटा दा'वा किया था। क़बीलए बनी ह़नीफ़ा के चन्द लोग उस के फ़रेब में आ गए थे, येह कज़्ज़ाब ज़मानए ख़िलाफ़ते ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ में वह़शी क़ातिले अमीर ह़म्ज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهُ के हाथ से क़त्ल हुवा। **192 शाने नुज़ूल :** येह अ़ब्दुल्लाह बिन अबी सरह़ कातिबे वह्य के ह़क़ में नाज़िल हुई। जब आयत "وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ" (और बेशक हम ने आदमी को चुनी हुई मिट्टी से बनाया) नाज़िल हुई उस ने इस को लिखा और आख़िर तक पहुंचते पहुंचते पैदाइशे इन्सान की तफ़्सील पर मुत्तलअ़ हो कर मुतअ़ज्जिब हुवा और इस ह़ालत में आयत का आख़िर "فَتَبٰرَكَ اللهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ" (तो बड़ी बरकत वाला है **अल्लाह** सब से बेहतर बनाने वाला) बे इख़्तियार उस की ज़बान पर जारी हो गया, इस पर उस को येह घमन्ड हुवा कि मुझ पर वह्य आने लगी और मुरतद हो गया येह न समझा कि नूरे वह्य और क़ुव्वत व हुस्ने कलाम से आयत का आख़िर कलिमा ज़बान पर आ गया इस में उस की क़ाबिलिय्यत का कोई दख़्ल न था ज़ोरे कलाम ख़ुद अपने आख़िर को बता दिया करता है जैसे कभी कोई शाइर नफ़ीस मज़्मून पढ़े वोह मज़्मून ख़ुद क़ाफ़िया बता देता है और सुनने वाले शाइर से पहले क़ाफ़िया पढ़ देते हैं उन में ऐसे लोग भी होते हैं जो हरगिज़ वैसा शे'र कहने पर क़ादिर नहीं तो क़ाफ़िया बताना उन की क़ाबिलिय्यत नहीं कलाम की क़ुव्वत है और यहां तो नूरे वह्य और नूरे नबी से सीने में रोशनी

www.dawateislami.net

غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْۤا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ

मौत की सख़्तियों में हैं और फ़िरिश्ते हाथ फैलाए हुए हैं[193] कि निकालो अपनी जानें आज

تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ

तुम्हें ख़्वारी का अ़ज़ाब दिया जाएगा बदला उस का कि अल्लाह पर झूट लगाते थे[194] और

عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۹۳﴾ وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ

उस की आयतों से तकब्बुर करते और बेशक तुम हमारे पास अकेले आए जैसा हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया

مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ

था[195] और पीठ पीछे छोड़ आए जो मालो मताअ़ हम ने तुम्हें दिया था और हम तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफ़ारिशियों को नहीं देखते

الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ

जिन का तुम अपने में साझा बताते थे[196] बेशक तुम्हारे आपस की डोर कट गई[197] और तुम से गए

ع ١١ ١٧ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۹۴﴾ ع اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ؕ يُخْرِجُ الْحَيَّ

जो दा'वे करते थे[198] बेशक अल्लाह दाने और गुठली को चीरने वाला है[199] ज़िन्दा को

مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿۹۵﴾

मुर्दा से निकाले[200] और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालने वाला[201] येह है अल्लाह तुम कहां औंधे जाते हो[202]

فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ ذٰلِكَ

तारीकी चाक कर के सुब्ह़ निकालने वाला और उस ने रात को चैन बनाया[203] और सूरज और चांद को हिसाब[204] येह

आती थी। चुनान्चे मजलिस शरीफ़ से जुदा होने और मुरतद हो जाने के बा'द फिर वोह एक जुम्ला भी ऐसा बनाने पर क़ादिर न हुवा जो नज़्मे क़ुरआनी से मिल सकता, आख़िर कार ज़मानए अक़्दस ही में क़ब्ले फ़त्हे मक्का फिर इस्लाम से मुशर्रफ़ हुवा। **193 :** अरवाह़ क़ब्ज़ करने के लिये झिड़क्ते जाते हैं और कहते जाते हैं **194 :** नुबुव्वत और वह़्य के झूटे दा'वे कर के और अल्लाह के लिये शरीक और बीबी बच्चे बता कर। **195 :** न तुम्हारे साथ माल है न जाह न औलाद जिन की मह़ब्बत में तुम उम्र भर गिरिफ़्तार रहे न वोह बुत जिन्हें पूजा किये (करते थे) आज उन में से कोई तुम्हारे काम न आया। येह कुफ़्फ़ार से रोज़े क़ियामत फ़रमाया जावेगा। **196 :** कि वोह इबादत के ह़क़्दार होने में अल्लाह के शरीक हैं। (مَعَاذَ اللّٰه) **197 :** और अ़लाक़े (तअ़ल्लुक़ात) टूट गए जमाअ़त मुन्तशिर हो गई। **198 :** तुम्हारे वोह तमाम झूटे दा'वे जो तुम दुन्या में किया करते थे बातिल हो गए। **199 :** तौह़ीद व नुबुव्वत के बयान के बा'द अल्लाह तआ़ला ने अपने कमाले क़ुदरत व इल्मो ह़िक्मत के दलाइल ज़िक्र फ़रमाए क्यूं कि मक़्सूदे आ'ज़म अल्लाह سُبْحَانَهٗ और उस के तमाम सिफ़ात व अफ़्आ़ल की मा'रिफ़त है और येह जानना कि वोही तमाम चीज़ों का पैदा करने वाला है और जो ऐसा हो वोही मुस्तह़िक़्क़े इबादत हो सकता है न कि वोह बुत जिन्हें मुश्रिकीन पूजते हैं। ख़ुश्क दाना और गुठली को चीर कर उन से सब्ज़ा और दरख़्त पैदा करना और ऐसी संगलाख़ ज़मीनों में इन के नर्म रेशों को रवां करना जहां आहनी मेख़ भी काम न कर सके उस की क़ुदरत के कैसे अ़जाइबात हैं। **200 :** जानदार सब्ज़े को बेजान दाने और गुठली से और इन्सान व ह़ैवान को नुत़्फ़े से और परिन्द को अन्डे से। **201 :** जानदार दरख़्त से बेजान गुठली और दाने को, और इन्सान व ह़ैवान से नुत़्फ़े को और परिन्द से अन्डे को, येह उस के अ़जाइबे क़ुदरतो ह़िक्मत हैं। **202 :** और ऐसे बराहीन क़ाइम होने के बा'द क्यूं ईमान नहीं लाते और मौत के

تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٩٦﴾ وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا

साधा (मुक़र्रर किया हुवा) है ज़बर दस्त जानने वाले का और वोही है जिस ने तुम्हारे लिये तारे बनाए कि इन से राह

بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٩٧﴾

पाओ ख़ुश्की और तरी के अंधेरों में हम ने निशानियां मुफ़स्सल बयान कर दीं इल्म वालों के लिये

وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ؕ

और वोही है जिस ने तुम को एक जान से पैदा किया[205] फिर कहीं तुम्हें ठहरना है[206] और कहीं अमानत रहना[207]

قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾ وَهُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ

बेशक हम ने मुफ़स्सल आयतें बयान कर दीं समझ वालों के लिये और वोही है जिस ने आस्मान से

مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ

पानी उतारा तो हम ने उस से हर उगने वाली चीज़ निकाली[208] तो हम ने उस से निकाली सब्ज़ी जिस में

مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَّجَنّٰتٍ

से दाने निकालते हैं एक दूसरे पर चढ़े हुए और खजूर के गाभे से पास पास गुच्छे और अंगूर

مِّنْ اَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ اُنْظُرُوْۤا

के बाग़ और ज़ैतून और अनार किसी बात में मिलते और किसी बात में अलग उस का

اِلٰى ثَمَرِهٖۤ اِذَاۤ اَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٩٩﴾

फल देखो जब फले और उस का पकना बेशक इस में निशानियां हैं ईमान वालों के लिये

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ

और[209] अल्लाह का शरीक ठहराया जिन्नों को[210] हालां कि उसी ने इन को बनाया और उस के लिये बेटे और बेटियां गढ़ लीं

बा'द उठने का यक़ीन नहीं करते, जो बेजान नुत्फ़े से जानदार हैवान पैदा करता है उस की क़ुदरत से मुर्दा को ज़िन्दा करना क्या बईद है। **203 :** कि ख़ल्क़ इस में चैन पाती है और दिन की तकान व मांदगी को इस्तिराहत से दूर करती है और शब बेदार ज़ाहिद तन्हाई में अपने रब की इबादत से चैन पाते हैं। **204 :** कि इन के दौरे और सैर (गर्दिश करने) से इबादात व मुआमलात के अवक़ात मा'लूम हों। **205 :** या'नी हज़रते आदम से। **206 :** मां के रेहम में या ज़मीन के ऊपर **207 :** बाप की पुश्त में या क़ब्र के अन्दर **208 :** पानी एक, और इस से जो चीज़ें उगाईं वोह क़िस्म क़िस्म और रंगारंग **209 :** बा वुजूदे कि इन दलाइले क़ुदरत व अजाइबे हिक्मत और इस इन्आमो इक्राम और इन ने'मतों के पैदा करने और अता फ़रमाने का इक्तिज़ा था कि उस करीम कारसाज़ पर ईमान लाते बजाए इस के बुत परस्तों ने येह सितम किया (जो आयत में आगे मज़्कूर है) कि **210 :** कि उन की इताअत कर के बुत परस्त हो गए।

www.dawateislami.net

ع ٣ ١٨

عِلْمٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٠٠﴾ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

जहालत से पाकी और बर तरी है उस को उन की बातों से बे किसी नुमूने के आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला

اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ؕ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ

उस के बच्चा कहां से हो हालां कि उस की औरत नहीं[211] और उस ने हर चीज़ पैदा की[212]

وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٠١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ خَالِقُ

और वोह सब कुछ जानता है येह है अल्लाह तुम्हारा रब[213] उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं हर चीज़ का

كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿١٠٢﴾ لَا تُدْرِكُهُ

बनाने वाला तो उसे पूजो और वोह हर चीज़ पर निगहबान है[214] आंखें उसे

الْاَبْصَارُ ۫ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٠٣﴾ قَدْ

इहाता नहीं करतीं[215] और सब आंखें उस के इहाते में हैं और वोही है निहायत बातिन पूरा ख़बरदार तुम्हारे पास

جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ؕ

आंखें खोलने वाली दलीलें आईं तुम्हारे रब की तरफ़ से तो जिस ने देखा तो अपने भले को और जो अन्धा हुवा तो अपने बुरे को

وَمَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ﴿١٠٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا

और मैं तुम पर निगहबान नहीं और हम इसी तरह आयतें तरह तरह से बयान करते हैं[216] और इस लिये कि काफ़िर बोल उठें

211 : और बे औरत औलाद नहीं होती और ज़ौजा उस की शान के लाइक़ नहीं क्यूं कि कोई शै उस की मिस्ल नहीं। **212 :** तो जो है वोह उस की मख़्लूक़ है और मख़्लूक़ औलाद नहीं हो सकती तो किसी मख़्लूक़ को औलाद बताना बातिल है। **213 :** जिस की सिफ़ात मज़्कूर हुईं और जिस की येह सिफ़ात हों वोही मुस्तहिक़े इबादत है। **214 :** ख़्वाह वोह रिज़्क़ हो या अजल या हम्ल। **215 : मसाइल : इदराक** के मा'ना हैं मरई के जवानिब व हुदूद पर वाक़िफ़ होना, इसी को इहाता कहते हैं। इदराक की येही तफ़्सीर हज़रते सईद इब्ने मुसय्यब और हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से मन्क़ूल है और जम्हूर मुफ़स्सिरीन इदराक की तफ़्सीर इहाता से फ़रमाते हैं और इहाता उसी चीज़ का हो सकता है जिस के हुदूद व जिहात हों, अल्लाह तआ़ला के लिये हद व जिहत मुहाल है तो उस का इदराक व इहाता भी ना मुम्किन, येही मज़हब है अहले सुन्नत का। ख़वारिज व मो'तज़िला वग़ैरा गुमराह फ़िर्क़े इदराक और रूयत में फ़र्क़ नहीं करते, इस लिये वोह इस गुमराही में मुब्तला हो गए कि उन्हों ने दीदारे इलाही को मुहाले अ़क़्ली क़रार दे दिया, बा वुजूदे कि नफ़िये रूयत नफ़िये इ़ल्म को मुस्तल्ज़म है वरना जैसा कि बारी तआ़ला ब ख़िलाफ़ तमाम मौजूदात के बिला कैफ़िय्यत व जिहत जाना जा सकता है, ऐसे ही देखा भी जा सकता है, क्यूं कि अगर दूसरी मौजूदात बिग़ैर कैफ़िय्यत व जिहत के देखी नहीं जा सकतीं तो जानी भी नहीं जा सकतीं। राज़ इस का येह है कि रूयत व दीद के मा'ना येह हैं कि बसर किसी शै को जैसी कि वोह हो वैसा जाने तो जो शै जिहत वाली होगी उस की रूयत व दीद जिहत में होगी और जिस के लिये जिहत न होगी उस की दीद बे जिहत होगी। **दीदारे इलाही :** आख़िरत में अल्लाह तआ़ला का दीदार मोमिनीन के लिये अहले सुन्नत का अ़क़ीदा और क़ुरआन व ह़दीस व इज्माए़ सह़ाबा व सलफ़े उम्मत के दलाइले कसीरा से साबित है। क़ुरआने करीम में फ़रमाया : ''وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۝ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝'' (कुछ मुंह उस दिन तरो ताज़ा होंगे अपने रब को देखते) इस से साबित है कि मोमिनीन को रोज़े क़ियामत उन के रब का दीदार मुयस्सर होगा। इस के इ़लावा और बहुत आयात और सिह़ाह की कसीर अह़ादीस से साबित है, अगर दीदारे इलाही ना मुम्किन होता तो ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام दीदार का सुवाल न फ़रमाते, ''رَبِّ اَرِنِیْۤ اَنْظُرْ اِلَیْكَ'' (ऐ रब मेरे ! मुझे अपना दीदार दिखा कि मैं तुझे देखूं) इर्शाद न करते और उन के जवाब में ''اِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِیْ'' (येह पहाड़ अगर अपनी जगह ठहरा रहा तो तू अ़न्क़रीब मुझे देख लेगा) न फ़रमाया जाता। इन दलाइल से साबित हो गया कि आख़िरत में मोमिनीन के लिये दीदारे इलाही शरअ़ में साबित है और इस का इन्कार गुमराही। **216 :** कि हुज्जत लाज़िम हो।

www.dawateislami.net

دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿١٠٥﴾ اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ

कि तुम तो पढ़े हो और इस लिये कि उसे इ़ल्म वालों पर वाज़ेह़ कर दें उस पर चलो जो तुम्हें तुम्हारे रब की त़रफ़ से वह़्य होती है[217]

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٦﴾ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ

उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुश्रिकों से मुंह फेर लो और अल्लाह चाहता तो वोह

اَشْرَكُوْا ۭ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ﴿١٠٧﴾ وَ

शरीक न करते और हम ने तुम्हें उन पर निगह्बान नहीं किया और तुम उन पर कड़ोड़े (निगह्बान) नहीं और

لَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًۢا بِغَيْرِ عِلْمٍ ۭ

उन्हें गाली न दो जिन को वोह अल्लाह के सिवा पूजते हैं कि वोह अल्लाह की शान में बे अदबी करेंगे ज़ियादती और जहालत से[218]

كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۠ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ

यूंही हम ने हर उम्मत की निगाह में उस के अ़मल भले कर दिये हैं फिर उन्हें अपने रब की त़रफ़ फिरना है और वोह उन्हें बता देगा

بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٠٨﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَىِٕنْ جَاۗءَتْهُمْ

जो करते थे और उन्हों ने अल्लाह की क़सम खाई अपने ह़ल्फ़ में पूरी कोशिश से कि अगर उन के पास कोई निशानी

اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۭ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا

आई तो ज़रूर उस पर ईमान लाएंगे तुम फ़रमा दो कि निशानियां तो अल्लाह के पास हैं[219] और तुम्हें[220] क्या ख़बर कि जब

جَاۗءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٩﴾ وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا

वोह आएं तो येह ईमान न लाएंगे और हम फेर देते हैं उन के दिलों और आंखों को[221] जैसा वोह पहली बार उस पर

بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١١٠﴾ ع ٣ ١٩

ईमान न लाए थे[222] और उन्हें छोड़ देते हैं कि अपनी सरकशी में भटका करें

217 : और कुफ़्फ़ार की बेहूदा गोइयों की त़रफ़ इल्तिफ़ात न करो। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ात़िर है कि आप कुफ़्फ़ार की यावह गोइयों से रन्जीदा न हों, येह उन की बद नसीबी है कि वोह ऐसी वाज़ेह़ बुरहानों से फ़ाएदा न उठाएं। **218 :** क़तादा का क़ौल है कि मुसल्मान कुफ़्फ़ार के बुतों की बुराई किया करते थे ताकि कुफ़्फ़ार को नसीह़त हो और वोह बुत परस्ती के ऐ़ब से बा ख़बर हों मगर उन ना ख़ुदा शनास जाहिलों ने बजाए पन्द पज़ीर होने के शाने इलाही में बे अदबी के साथ ज़बान खोलनी शुरूअ़ की। इस पर येह आयत नाज़िल हुई अगर्चे बुतों को बुरा कहना और उन की ह़क़ीक़त का इज़्हार ता़अ़त व सवाब है लेकिन अल्लाह और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की शान में कुफ़्फ़ार की बद गोइयों को रोकने के लिये इस को मन्अ़ फ़रमाया गया। इब्ने अम्बारी का क़ौल है कि येह ह़ुक्म अव्वल ज़माने में था जब अल्लाह तआ़ला ने इस्लाम को क़ुव्वत अ़ता फ़रमाई मन्सूख़ हो गया। **219 :** वोह जब चाहता है ह़स्बे इक़्तिज़ाए ह़िक्मत नाज़िल फ़रमाता है। **220 :** ऐ मुसल्मानो ! **221 :** ह़क़ के मानने और देखने से **222 :** उन आयात पर जो नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के दस्ते अक़्दस पर ज़ाहिर हुई थीं मिस्ल शक़्क़ुल क़मर वग़ैरा मो'जिज़ाते बाहिरात के।

www.dawateislami.net

وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ

और अगर हम उन की तरफ़ फ़िरिश्ते उतारते[223] और उन से मुर्दे बातें करते और हम हर चीज़

كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ

उन के सामने उठा लाते जब भी वोह ईमान लाने वाले न थे[224] मगर येह कि ख़ुदा चाहता[225] लेकिन उन में बहुत

يَجْهَلُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ

निरे जाहिल हैं[226] और इसी तरह हम ने हर नबी के दुश्मन किये हैं आदमियों

وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ؕ وَلَوْ

और जिन्नों में के शैतान कि उन में एक दूसरे पर ख़ुफ़्या डालता है बनावट की बात[227] धोके को और तुम्हारा

شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ

रब चाहता तो वोह ऐसा न करते[228] तो उन्हें उन की बनावटों पर छोड़ दो[229] और इस लिये कि उस[230] की तरफ़

اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ

उन के दिल झुकें जिन्हें आख़िरत पर ईमान नहीं और उसे पसन्द करें और गुनाह कमाएं जो उन्हें

مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿۱۱۳﴾ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ

गुनाह कमाना है तो क्या अल्लाह के सिवा मैं किसी और का फ़ैसला चाहूं और वोही है जिस ने तुम्हारी तरफ़

الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ؕ وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ

मुफ़स्सल किताब उतारी[231] और जिन को हम ने किताब दी वोह जानते हैं कि येह तेरे रब की तरफ़ से

223 **शाने नुज़ूल :** इब्ने जरीर का क़ौल है कि येह आयत इस्तिहज़ा करने वाले क़ुरैश की शान में नाज़िल हुई जिन्हों ने सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि ऐ मुहम्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) आप हमारे मुर्दों को उठा लाइये हम उन से दरयाफ़्त कर लें कि आप जो फ़रमाते हैं येह हक़ है या नहीं और हमें फ़िरिश्ते दिखाइये जो आप के रसूल होने की गवाही दें या अल्लाह और फ़िरिश्तों को हमारे सामने लाइये। इस के जवाब में येह आयते करीमा नाज़िल हुई। 224 : वोह अहले शक़ावत हैं। 225 : उस की मशिय्यत जो होती है वोही होता है जो उस के इल्म में अहले सआदत हैं वोह ईमान से मुशर्रफ़ होते हैं। 226 : नहीं जानते कि येह लोग वोह निशानियां बल्कि उस से ज़ियादा देख कर भी ईमान लाने वाले नहीं। (جمل ومدارک) 227 : या'नी वस्वसे और फ़रेब की बातें इग़वा करने (बहकाने) के लिये। 228 : लेकिन अल्लाह तआला अपने बन्दों में से जिसे चाहता है इम्तिहान में डालता है ताकि उस के मेहनत पर साबिर रहने से ज़ाहिर हो जाए कि येह जज़ील सवाब पाने वाला है। 229 : अल्लाह उन्हें बदला देगा, रुस्वा करेगा और आप की मदद फ़रमाएगा। 230 : बनावट की बात 231 : या'नी क़ुरआन शरीफ़ जिस में अम्र व नही, वा'दा व वईद और हक़ व बातिल का फ़ैसला और मेरे सिद्क़ की शहादत और तुम्हारे इफ़्तिरा का बयान है। **शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से मुश्रिकीन कहा करते थे कि आप हमारे और अपने दरमियान एक हकम मुक़र्रर कीजिये। उन के जवाब में येह आयत नाज़िल हुई।

www.dawateislami.net

رَبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ

सच उतरा है[232] तो ऐ सुनने वाले तू हरगिज़ शक वालों में न हो और पूरी है तेरे रब की बात

صِدْقًا وَّعَدْلًا ؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿۱۱۵﴾ وَاِنْ

सच और इन्साफ़ में उस की बातों का कोई बदलने वाला नहीं[233] और वोही है सुनता जानता और ऐ सुनने

تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِى الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ

वाले ज़मीन में अक्सर वोह हैं कि तू उन के कहे पर चले तो तुझे अल्लाह की राह से बहका दें वोह सिर्फ़ गुमान के

اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿۱۱۶﴾ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ

पीछे हैं[234] और निरी अट्कलें [फ़ुज़ूल अन्दाज़े] दौड़ाते हैं[235] तेरा रब ख़ूब जानता है कि कौन बहका

عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿۱۱۷﴾ فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ

उस की राह से और वोह ख़ूब जानता है हिदायत वालों को तो खाओ उस में से जिस पर अल्लाह का नाम

عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ

लिया गया[236] अगर तुम उस की आयतें मानते हो और तुम्हें क्या हुवा कि उस में से न खाओ जिस[237]

اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ؕ

पर अल्लाह का नाम लिया गया वोह तो तुम से मुफ़स्सल बयान कर चुका जो कुछ तुम पर ह़राम हुवा[238] मगर जब तुम्हें उस से मजबूरी हो[239]

وَاِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَآئِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ

और बेशक बहुतेरे अपनी ख़्वाहिशों से गुमराह करते हैं बे जाने बेशक तेरा रब ह़द से बढ़ने

232 : क्यूं कि उन के पास इस की दलीलें हैं। 233 : न कोई उस की क़ज़ा का तब्दील करने वाला न हुक्म का रद करने वाला न उस का वा'दा ख़िलाफ़ हो सके। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि कलाम जब ताम है तो वोह क़ाबिले नक़्स व तग़यीर नहीं और वोह क़ियामत तक तह़रीफ़ व तग़यीर से महफ़ूज़ है। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं : मा'ना येह हैं कि किसी की क़ुदरत नहीं कि क़ुरआने पाक की तह़रीफ़ कर सके क्यूं कि अल्लाह तआ़ला इस की हिफ़ाज़त का ज़ामिन है। (تفسیر ابوالسعود) 234 : अपने जाहिल और गुमराह बाप दादा की तक़्लीद करते हैं, बसीरत व ह़क़ शनासी से महरूम हैं। 235 : कि येह ह़लाल है येह ह़राम और अट्कल से कोई चीज़ ह़लाल ह़राम नहीं होती जिसे अल्लाह और उस के रसूल ने ह़लाल किया वोह ह़लाल और जिसे ह़राम किया वोह ह़राम। 236 : या'नी जो अल्लाह के नाम पर ज़ब्ह़ किया गया न वोह जो अपनी मौत मरा या बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ किया गया वोह ह़राम है, ह़िल्लत अल्लाह के नाम पर ज़ब्ह़ होने से मुतअ़ल्लिक़ है, येह मुश्रिकीन के उस ए'तिराज़ का जवाब है कि जो उन्हों ने मुसल्मानों पर किया था कि तुम अपना क़त्ल किया हुवा तो खाते हो और अल्लाह का मारा हुवा या'नी जो अपनी मौत मरे उस को ह़राम जानते हो। 237 : ज़बीह़ा 238 **मस्अला :** इस से साबित हुवा कि ह़राम चीज़ों का मुफ़स्सल ज़िक्र होता है और सुबूते हुरमत के लिये हुक्मे हुरमत दरकार है और जिस चीज़ पर शरीअ़त में हुरमत (ह़राम होने) का हुक्म न हो वोह मुबाह़ है। 239 : तो इन्दल इज़्तिरार क़दरे ज़रूरत रवा है। (या'नी शदीद मजबूरी के वक़्त ब क़दरे ज़रूरत जाइज़ है)

www.dawateislami.net

بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ وَ ذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَ بَاطِنَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ

वालों को ख़ूब जानता है और छोड़ दो खुला और छुपा गुनाह वोह जो

يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ﴿۱۲۰﴾ وَ لَا تَاْكُلُوْا مِمَّا

गुनाह कमाते हैं अ़न्क़रीब अपनी कमाई की सज़ा पाएंगे और उसे न खाओ जिस

لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَ اِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ وَ اِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ اِلٰۤى

पर अल्लाह का नाम न लिया गया[240] और वोह बेशक हुक्म उ़दूली है और बेशक शैत़ान अपने दोस्तों के

اَوْلِيٰٓـئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَ اِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ﴿۱۲۱﴾ ع اَوَ مَنْ

दिलों में डालते हैं कि तुम से झगड़ें और अगर तुम उन का कहना मानो[241] तो उस वक़्त तुम मुश्रिक हो[242] और क्या

كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَ جَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ بِهٖ فِى النَّاسِ كَمَنْ

वोह कि मुर्दा था तो हम ने उसे ज़िन्दा किया[243] और उस के लिये एक नूर कर दिया[244] जिस से लोगों में चलता है[245] वोह उस

مَّثَلُهٗ فِى الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ

जैसा हो जाएगा जो अंधेरियों में है[246] उन से निकलने वाला नहीं यूंही काफ़िरों की आंख में उन के

240 : वक़्ते ज़ब्ह़ न तह़क़ीक़न न तक़्दीरन, ख़्वाह इस त़रह़ कि वोह जानवर अपनी मौत मर गया हो या इस त़रह़ कि उस को बिग़ैर तस्मिया के या ग़ैरे ख़ुदा के नाम पर ज़ब्ह़ किया गया हो येह सब ह़राम हैं लेकिन जहां मुसल्मान ज़ब्ह़ करने वाला वक़्ते ज़ब्ह़ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहना भूल गया वोह ज़ब्ह़ जाइज़ है वहां ज़िक्र तक़्दीरी है जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा। 241 : और अल्लाह के ह़राम किये हुए को ह़लाल जानो 242 : क्यूं कि दीन में हुक्मे इलाही को छोड़ना और दूसरे के हुक्म को मानना अल्लाह के सिवा और को ह़ाकिम क़रार देना शिर्क है। 243 : मुर्दा से काफ़िर और ज़िन्दा से मोमिन मुराद है क्यूं कि कुफ़्र क़ुलूब के लिये मौत है और ईमान ह़यात। 244 : नूर से ईमान मुराद है जिस की बदौलत आदमी कुफ़्र की तारीकियों से नजात पाता है। क़तादा का क़ौल है कि नूर से किताबुल्लाह या'नी क़ुरआन मुराद है। 245 : और बीनाई ह़ासिल कर के राहे ह़क़ का इम्तियाज़ कर लेता है। 246 : कुफ़्र व जहल व तीरह बात़िनी की येह एक मिसाल है जिस में मोमिन व काफ़िर का ह़ाल बयान फ़रमाया गया है कि हिदायत पाने वाला मोमिन उस मुर्दे की त़रह़ है जिस ने ज़िन्दगानी पाई और उस को नूर मिला जिस से वोह मक़्सूद की राह पाता है और काफ़िर उस की मिस्ल है जो त़रह़ त़रह़ की अंधेरियों में गिरिफ़्तार हुवा और उन से निकल न सके हमेशा ह़ैरत में मुब्तला रहे, येह दोनों मिसालें हर मोमिन व काफ़िर के लिये आ़म हैं अगर्चे बक़ौल ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا इन का शाने नुज़ूल येह है कि अबू जहल ने एक रोज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم पर कोई नजिस चीज़ फेंकी थी उस रोज़ ह़ज़रते अमीर ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ शिकार को गए हुए थे जिस वक़्त वोह हाथ में कमान लिये हुए शिकार से वापस आए तो उन्हें इस वाक़िए़ की ख़बर दी गई, गो अभी तक वोह ईमान से मुशर्रफ़ न हुए थे मगर येह ख़बर सुन कर उन को निहायत त़ैश आया वोह अबू जहल पर चढ़ गए और उस को कमान से मारने लगे और अबू जहल आ़जिज़ी व ख़ुशामद करने लगा और कहने लगा ऐ अबू या'ला ! (ह़ज़रत अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुन्यत है) क्या आप ने नहीं देखा कि मुह़म्मद (मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم) कैसा दीन लाए और उन्हों ने हमारे मा'बूदों को बुरा कहा और हमारे बाप दादा की मुख़ालफ़त की और हमें बद अ़क़्ल बताया, इस पर ह़ज़रत अमीरे ह़म्ज़ा ने फ़रमाया : तुम्हारे बराबर बद अ़क़्ल कौन है कि अल्लाह को छोड़ कर पथ्थरों को पूजते हो, मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم) अल्लाह के रसूल हैं, उसी वक़्त ह़ज़रत अमीरे ह़म्ज़ा इस्लाम ले आए। इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई तो ह़ज़रत अमीरे ह़म्ज़ा का ह़ाल उस के मुशाबेह है जो मुर्दा था ईमान न रखता था अल्लाह तआ़ला ने उस को ज़िन्दा किया और नूरे बात़िन अ़त़ा फ़रमाया और अबू जहल की शान येही है कि वोह कुफ़्र व जहल की तारीकियों में गिरिफ़्तार है और

www.dawateislami.net

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۲﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا

आ'माल भले कर दिये गए हैं और इसी त़रह़ हम ने हर बस्ती में उस के मुजरिमों के सर्ग़ने किये

لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ؕ وَمَا يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿۱۲۳﴾ وَاِذَا

कि उस में दाउं खेलें[247] और दाउं नहीं खेलते मगर अपनी जानों पर और उन्हें शुऊ़र नहीं[248] और जब

جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ رُسُلُ اللّٰهِ ؕ

उन के पास कोई निशानी आए कहते हैं हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे जब तक हमें भी वैसा ही न मिले जैसा अल्लाह के रसूलों को मिला[249]

اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسٰلَتَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا صَغَارٌ

अल्लाह ख़ूब जानता है जहां अपनी रिसालत रखे[250] अ़न्क़रीब मुजरिमों को अल्लाह

عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيْدٌ ۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿۱۲۴﴾ فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ

के यहां ज़िल्लत पहुंचेगी और सख़्त अ़ज़ाब बदला उन के मक्र का और जिसे अल्लाह

اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ

राह दिखाना चाहे उस का सीना इस्लाम के लिये खोल देता है[251] और जिसे गुमराह करना चाहे उस का

صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ

सीना तंग ख़ूब रुका हुवा कर देता है[252] गोया किसी की ज़बर दस्ती से आस्मान पर चढ़ रहा है अल्लाह यूंही

اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۲۵﴾ وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ

अ़ज़ाब डालता है ईमान न लाने वालों को और येह[253] तुम्हारे रब की सीधी

مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۲۶﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ

राह है हम ने आयतें मुफ़स्सल बयान कर दीं नसीह़त मानने वालों के लिये उन के लिये सलामती का घर है

247 : और त़रह़ त़रह़ के ह़ीलों और फ़रेबों और मक्कारियों से लोगों को बहकाते और बात़िल को रवाज देने की कोशिश करते हैं। **248 :** कि इस का वबाल उन्हीं पर पड़ता है। **249 :** या'नी जब तक हमारे पास वह़्य न आए और हमें नबी न बनाया जाए। **शाने नुज़ूल :** वलीद बिन मुग़ीरा ने कहा था कि अगर नुबुव्वत ह़क़ हो तो इस का ज़ियादा मुस्तह़िक़ मैं हूं क्यूं कि मेरी उ़म्र सय्यिदे आ़लम (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) से ज़ियादा है और माल भी, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। **250 :** या'नी अल्लाह जानता है कि नुबुव्वत की अहलिय्यत और इस का इस्तिह़्क़ाक़ किस को है किस को नहीं, उ़म्र व माल से कोई मुस्तह़िक़े नुबुव्वत नहीं हो सकता, येह नुबुव्वत के त़लब गार तो ह़सद, मक्र, बद अ़ह़दी वग़ैरा क़बाएह़ अफ़्आ़ल और रज़ाइल ख़िसाल में मुब्तला हैं, येह कहां और नुबुव्वत का मन्सबे आ़ली कहां। **251 :** उस को ईमान की तौफ़ीक़ देता है और उस के दिल में रोशनी पैदा करता है। **252 :** कि उस में इ़ल्म और दलाइले तौह़ीद व ईमान की गुन्जाइश न हो तो उस की ऐसी ह़ालत होती है कि जब उस को ईमान की दा'वत दी जाती है और इस्लाम की त़रफ़ बुलाया जाता है तो वोह उस पर निहायत शाक़ होता है और उस को बहुत दुश्वार मा'लूम होता है। **253 :** दीने इस्लाम

www.dawateislami.net

عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۷﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ

अपने रब के यहां और वोह उन का मौला है येह उन के कामों का फल है और जिस दिन उन सब को उठाएगा

جَمِيْعًا ج يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ج وَقَالَ

और फ़रमाएगा ऐ जिन्न के गुरोह तुम ने बहुत आदमी घेर लिये[254] और उन के

اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا

दोस्त आदमी अ़र्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब हम में एक ने दूसरे से फ़ाएदा उठाया[255] और हम अपनी उस मीआ़द को पहुंच गए

الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ط قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ

जो तू ने हमारे लिये मुक़र्रर फ़रमाई थी[256] फ़रमाएगा आग तुम्हारा ठिकाना है हमेशा इस में रहो मगर जिसे ख़ुदा

اللّٰهُ ط اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۲۸﴾ وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ

चाहे[257] ऐ महबूब बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला इ़ल्म वाला है और यूंही हम ज़ालिमों में एक को दूसरे

ع بَعْضًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۲۹﴾ ع يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ

पर मुसल्लत़ करते हैं बदला उन के किये का[258] ऐ जिन्नों और आदमियों के गुरोह क्या तुम्हारे पास

رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ

तुम में के रसूल न आए थे तुम पर मेरी आयतें पढ़ते और तुम्हें येह दिन[259] देखने से

هٰذَا ط قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا

डराते[260] कहेंगे हम ने अपनी जानों पर गवाही दी[261] और उन्हें दुन्या की ज़िन्दगी ने फ़रेब दिया और ख़ुद

عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿۱۳۰﴾ ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ

अपनी जानों पर गवाही देंगे कि वोह काफ़िर थे[262] येह[263] इस लिये कि तेरा रब बस्तियों को[264]

254 : उन को बहकाया और इग़्वा किया । **255 :** इस त़रह़ कि इन्सानों ने शहवात व मआ़सी में उन से मदद पाई और जिन्नों ने इन्सानों को अपना मुत़ीअ़ बनाया आख़िर कार इस का नतीजा पाया । **256 :** वक़्त गुज़र गया क़ियामत का दिन आ गया ह़स्रतो नदामत बाक़ी रह गई । **257 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि येह इस्तिस्ना उस क़ौम की त़रफ़ राजेअ़ है जिस की निस्बत इ़ल्मे इलाही में है कि वोह इस्लाम लाएंगे और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم की तस्दीक़ करेंगे और जहन्नम से निकाले जाएंगे । **258 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि अल्लाह जब किसी क़ौम की भलाई चाहता है तो अच्छों को उन पर मुसल्लत़ करता है बुराई चाहता है तो बुरों को, इस से येह नतीजा बरआमद होता है कि जो क़ौम ज़ालिम होती है उस पर ज़ालिम बादशाह मुसल्लत़ किया जाता है तो जो उस ज़ालिम के पन्जए ज़ुल्म से रिहाई चाहें उन्हें चाहिये कि ज़ुल्म तर्क करें । **259 :** या'नी रोज़े क़ियामत **260 :** और अ़ज़ाबे इलाही का ख़ौफ़ दिलाते **261 :** काफ़िर जिन्न और इन्सान इक़रार करेंगे कि रसूल उन के पास आए और उन्हों ने ज़बानी पयाम पहुंचाए और इस दिन के पेश आने वाले ह़ालात का ख़ौफ़ दिलाया लेकिन काफ़िरों ने उन की तक्ज़ीब की और उन पर ईमान न लाए, कुफ़्फ़ार का येह इक़रार उस वक़्त होगा जब कि उन के आ'ज़ा व जवारेह़ उन के शिर्क व कुफ़्र की शहादतें देंगे ।

الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ﴿۱۳۱﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَمَا

जुल्म से तबाह नहीं करता कि उन के लोग बे ख़बर हों[265] और हर एक के लिये[266] उन के कामों से दरजे हैं और

رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۲﴾ وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ

तेरा रब उन के आ'माल से बे ख़बर नहीं और ऐ महबूब तुम्हारा रब बे परवा है रहमत वाला ऐ लोगो वोह चाहे तो

يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ

तुम्हें ले जाए[267] और जिसे चाहे तुम्हारी जगह लाए जैसे तुम्हें औरों

قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿۱۳۳﴾ ؕ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿۱۳۴﴾

की औलाद से पैदा किया[268] बेशक जिस का तुम्हें वा'दा दिया जाता है[269] ज़रूर आने वाली है और तुम थका नहीं सकते

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ

तुम फ़रमाओ ऐ मेरी क़ौम तुम अपनी जगह पर काम किये जाओ मैं अपना काम करता हूं तो अब जानना चाहते हो किस

تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا

का रहता है आख़िरत का घर बेशक ज़ालिम फ़लाह नहीं पाते और[270] अल्लाह ने जो

ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا

खेती और मवेशी पैदा किये उन में उसे एक हिस्सेदार ठहराया तो बोले येह अल्लाह का है उन के ख़याल में और येह

لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ

हमारे शरीकों का[271] तो वोह जो उन के शरीकों का है वोह तो ख़ुदा को नहीं पहुंचता और जो ख़ुदा का है

262 : क़ियामत का दिन बहुत तवील होगा और उस में हालात बहुत मुख़्तलिफ़ पेश आएंगे। जब कुफ़्फ़ार मोमिनीन के इन्आमो इक्राम और इज़्ज़तो मन्ज़िलत को देखेंगे तो अपने कुफ़्रो शिर्क से मुन्किर हो जाएंगे और इस ख़याल से कि शायद मुकर जाने से कुछ काम बने येह कहेंगे "وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ" या'नी ख़ुदा की क़सम ! हम मुशरिक न थे, उस वक़्त उन के मूंहों पर मोहरें लगा दी जाएंगी और उन के आ'ज़ा उन के कुफ़्रो शिर्क की गवाही देंगे इसी की निस्बत इस आयत में इर्शाद हुवा : "وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ۝" 263 : या'नी रसूलों की बि'सत 264 : उन की मा'सियत और 265 : बल्कि रसूल भेजे जाते हैं वोह उन्हें हिदायतें फ़रमाते हैं हुज्जतें क़ाइम करते हैं इस पर भी वोह सरकशी करते हैं तब हलाक किये जाते हैं। 266 : ख़्वाह वोह नेक हो या बद, नेकी और बदी के दरजे हैं उन्ही के मुताबिक़ सवाब व अ़ज़ाब होगा। 267 : या'नी हलाक कर दे 268 : और उन का जा नशीन बनाया। 269 : वोह चीज़ ख़्वाह क़ियामत हो या मरने के बा'द उठना या हिसाब या सवाब व अ़ज़ाब। 270 : ज़मानए जाहिलिय्यत में मुश्रिकीन का तरीक़ा था कि वोह अपनी खेतियों और दरख़्तों के फलों और चौपायों और तमाम मालों में से एक हिस्सा तो अल्लाह का मुक़र्रर करते थे और एक हिस्सा बुतों का तो जो हिस्सा अल्लाह के लिये मुक़र्रर करते थे उस को तो मेहमानों और मिस्कीनों पर सर्फ़ कर देते थे और जो बुतों के लिये मुक़र्रर करते थे वोह ख़ास उन पर और उन के ख़ादिमों पर सर्फ़ करते, जो हिस्सा अल्लाह के लिये मुक़र्रर करते अगर उस में से कुछ बुतों वाले हिस्से में मिल जाता तो उसे छोड़ देते और अगर बुतों वाले हिस्से में से कुछ इस में मिलता तो उस को निकाल कर फिर बुतों ही के हिस्से में शामिल कर देते, इस आयत में उन की इस जहालत और बद अ़क़्ली का ज़िक्र फ़रमा कर उन पर तम्बीह फ़रमाई गई। 271 : या'नी बुतों का।

www.dawateislami.net

فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿۱۳۶﴾ وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ

वोह उन के शरीकों को पहुंचता है क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं[272] और यूं ही बहुत मुश्रिकों

لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ

की निगाह में उन के शरीकों ने औलाद का क़त्ल भला कर दिखाया है[273] कि उन्हें हलाक करें

وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا

और उन का दीन उन पर मुश्तबह कर दें[274] और अल्लाह चाहता तो ऐसा न करते तो तुम उन्हें छोड़ दो वोह हैं और

يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳۷﴾ وَقَالُوْا هٰذِهٖۤ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَاۤ اِلَّا مَنْ

उन के इफ़्तिरा और बोले[275] येह मवेशी और खेती रोकी हुई[276] है इसे वोही खाए जिसे हम

نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ

चाहें अपने झूटे ख़याल से[277] और कुछ मवेशी हैं जिन पर चढ़ना हराम ठहराया[278] और कुछ मवेशी के ज़ब्ह पर

اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳۸﴾

अल्लाह का नाम नहीं लेते[279] येह सब अल्लाह पर झूट बांधना है अ़न्क़रीब वोह उन्हें बदला देगा उन के इफ़्तिराओं का

وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰۤى

और बोले जो उन मवेशी के पेट में है वोह निरा [ख़ालिस] हमारे मर्दों का है[280] और हमारी औ़रतों पर

اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ؕ سَيَجْزِيْهِمْ

हराम है और मरा हुवा निकले तो वोह सब[281] उस में शरीक हैं क़रीब है कि अल्लाह उन्हें उन की

272 : और इन्तिहा दरजे के जहल में गिरिफ़्तार हैं, ख़ालिक़े मुन्इम के इ़ज़्ज़तो जलाल की उन्हें ज़रा भी मा'रिफ़त नहीं और फ़सादे अ़क़्ल इस ह़द तक पहुंच गया कि उन्हों ने बेजान बुतों पथ्थर की तस्वीरों को कारसाज़े आ़लम के बराबर कर दिया और जैसा उस के लिये ह़िस्सा मुक़र्रर किया ऐसा ही बुतों के लिये भी किया बेशक येह बहुत ही बुरा फ़े'ल और इन्तिहा का जहल और अ़ज़ीम ख़ता व ज़लाल (गुमराही) है, इस के बा'द उन के जहल और ज़लालत की एक और ह़ालत ज़िक्र फ़रमाई जाती है। **273 :** यहां शरीकों से मुराद वोह शयातीन हैं जिन की इ़ताअ़त के शौक़ में मुश्रिकीन अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी और उस की मा'सियत गवारा करते थे और ऐसे क़बाएह़ अफ़्आ़ल और जाहिलाना अफ़्आ़ल के मुरतकिब होते थे जिन को अ़क़्ले सह़ीह़ कभी गवारा न कर सके और जिन की क़बाह़त में अदना समझ के आदमी को भी तरद्दुद न हो, बुत परस्ती की शामत से वोह ऐसे फ़सादे अ़क़्ल में मुब्तला हुए कि ह़ैवानों से बदतर हो गए और औलाद जिस के साथ हर जानदार को फ़ितूरतन मह़ब्बत होती है शयातीन के इत्तिबाअ़ में उस का बे गुनाह ख़ून करना उन्हों ने गवारा किया और इस को अच्छा समझने लगे। **274 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि येह लोग पहले ह़ज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام के दीन पर थे शयातीन ने उन को इ़ग़्वा कर के इन गुमराहियों में डाला ताकि उन्हें दीने इस्माईली से मुन्ह़रिफ़ करें **275 :** मुश्रिकीन अपने बा'ज़ मवेशियों और खेतियों को अपने बातिल मा'बूदों के साथ नामज़द कर के कि **276 :** मम्नूउ़ल इन्तिफ़ाअ़ (फ़ाएदा उठाना मन्अ़) **277 :** या'नी बुतों की ख़िदमत करने वाले वग़ैरा। **278 :** जिन को बह़ीरा, साइबा, ह़ामी कहते हैं। **279 :** बल्कि उन बुतों के नाम पर ज़ब्ह करते हैं और इन तमाम अफ़्आ़ल की निस्बत येह ख़याल करते हैं कि इन्हें अल्लाह ने इस का हुक्म दिया है। **280 :** सिर्फ़ उन्हीं के लिये ह़लाल है अगर ज़िन्दा पैदा हो। **281 :** मर्द व औ़रत

www.dawateislami.net

وَصْفَهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٣٩﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ

उन बातों का बदला देगा बेशक वोह इ़ल्म, ह़िक्मत वाला है बेशक तबाह हुए वोह जो अपनी औलाद को क़त्ल करते हैं

سَفَهًۢا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ؕ قَدْ

अह़मक़ाना जहालत से[282] और ह़राम ठहराते हैं वोह जो अल्लाह ने उन्हें रोज़ी दी[283] अल्लाह पर झूट बांधने को[284] बेशक

ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٤٠﴾ ع وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ

वोह बहके और राह न पाई[285] और वोही है जिस ने पैदा किये बाग़ कुछ ज़मीन पर छए [छाए] हुए[286]

وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ

और कुछ बे छए [बे फैले] और खजूर और खेती जिस में रंग रंग के खाने[287] और ज़ैतून

وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ

और अनार किसी बात में मिलते[288] और किसी में अलग[289] खाओ उस का फल जब फल लाए

وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ وَلَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٤١﴾ ۙ

और उस का ह़क़ दो जिस दिन कटे[290] और बे जा न ख़र्चो[291] बेशक बे जा ख़र्चने वाले उसे पसन्द नहीं

وَمِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ؕ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا

और मवेशी में से कुछ बोझ उठाने वाले और कुछ ज़मीन पर बिछे[292] खाओ उस में से जो अल्लाह ने तुम्हें रोज़ी दी और शैत़ान

282 शाने नुज़ूल : येह आयत ज़मानए जाहिलिय्यत के उन लोगों के ह़क़ में नाज़िल हुई जो अपनी लड़कियों को निहायत संगदिली और बे रह़मी के साथ ज़िन्दा दरगोर कर दिया करते थे, रबीआ़ व मुज़र वग़ैरा क़बाइल में इस का बहुत रवाज था और जाहिलिय्यत के बा'ज़ लोग लड़कों को भी क़त्ल करते थे और बे रह़मी का येह आ़लम था कि कुत्तों की परवरिश करते और औलाद को क़त्ल करते थे उन की निस्बत येह इर्शाद हुवा कि तबाह हुए। इस में शक नहीं कि औलाद अल्लाह तआ़ला की ने'मत है और इस की हलाकत से अपनी ता'दाद कम होती है अपनी नस्ल मिटती है येह दुन्या का ख़सारा है घर की तबाही है और आख़िरत में इस पर अ़ज़ाबे अ़ज़ीम है तो येह अ़मल दुन्या और आख़िरत दोनों में तबाही का बाइ़स हुवा और अपनी दुन्या और आख़िरत दोनों को तबाह कर लेना और औलाद जैसी अ़ज़ीज़ और प्यारी चीज़ के साथ इस क़िस्म की सफ़्फ़ाकी और बे दर्दी गवारा करना इन्तिहा दरजे की ह़माक़त और जहालत है। **283 :** या'नी बह़ीरे, साइबा, ह़ामी वग़ैरा जो मज़्कूर हो चुके। **284 :** क्यूं कि वोह येह गुमान करते हैं कि ऐसे मज़्मूम अफ़्आ़ल का अल्लाह ने हुक्म दिया है कि उन का येह ख़याल अल्लाह पर इफ़्तिरा है। **285 :** ह़क़ व सवाब की। **286 :** या'नी टटों (सहारे) पर क़ाइम किये हुए मिस्ल अंगूर वग़ैरा के **287 :** रंग और मज़े और मिक्दार और ख़ुश्बू में बाहम मुख़्तलिफ़ **288 :** मसलन रंग में या पत्तों में **289 :** मसलन ज़ाएक़े और तासीर में। **290 :** मा'ना येह हैं कि येह चीज़ें जब फलें खाना तो उसी वक़्त से तुम्हारे लिये मुबाह़ है और उस की ज़कात या'नी उ़श्र उस के कामिल होने के बा'द वाजिब होता है जब खेती काटी जाए या फल तोड़े जाएं। **मस्अला :** लकड़ी, बांस, घास के सिवा ज़मीन की बाक़ी पैदावार में अगर येह पैदावार बारिश से हो तो उस में उ़श्र वाजिब होता है और अगर रहट (चरख़े) वग़ैरा से हो तो निस्फ़ उ़श्र। **291 :** ह़ज़रते मुतर्जिम قُدِّسَ سِرُّہٗ ने इसराफ़ का तरजमा बे जा ख़र्च करना फ़रमाया, निहायत ही नफ़ीस तरजमा है अगर कुल माल ख़र्च कर डाला और अपने अ़याल को कुछ न दिया और ख़ुद फ़क़ीर बन बैठा तो सुद्दी का क़ौल है कि येह ख़र्च बे जा है और अगर सदक़ा देने ही से हाथ रोक लिया तो येह भी बे जा और दाख़िले इसराफ़ है जैसा कि सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने फ़रमाया। सुफ़्यान का क़ौल है कि अल्लाह की त़ाअ़त के सिवा और काम में जो माल ख़र्च किया जावे वोह क़लील भी हो तो इसराफ़ है। ज़ोहरी का क़ौल है कि इस के मा'ना येह हैं कि मा'सियत में ख़र्च न करो। मुजाहिद ने कहा : ह़क़्क़ुल्लाह

خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۙ﴿۱۴۲﴾ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۚ مِنَ الضَّاْنِ

के क़दमों पर न चलो बेशक वोह तुम्हारा सरीह़ दुश्मन है आठ नर और मादा एक जोड़ा भेड़

اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ

का और एक जोड़ा बकरी का तुम फ़रमाओ क्या उस ने दोनों नर ह़राम किये या दोनों मादा

اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ نَبِّـُٔوْنِيْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ

या वोह जिसे दोनों मादा पेट में लिये हैं[293] किसी इल्म से बताओ अगर तुम

صٰدِقِيْنَ ۙ﴿۱۴۳﴾ وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ

सच्चे हो और एक जोड़ा ऊंट का और एक जोड़ा गाय का तुम फ़रमाओ

ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ

क्या उस ने दोनों नर ह़राम किये या दोनों मादा या वोह जिसे दोनों मादा पेट में

الْاُنْثَيَيْنِ ؕ اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ

लिये हैं[294] क्या तुम मौजूद थे जब अल्लाह ने तुम्हें येह ह़ुक्म दिया[295] तो उस से बढ़ कर ज़ालिम

में कोताही करना इसराफ़ है और अगर अबू क़ुबैस पहाड़ सोना हो और उस तमाम को राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दो तो इसराफ़ न हो और एक दिरहम मा'सियत में ख़र्च करो तो इसराफ़। **292 :** चौपाए दो क़िस्म के होते हैं : कुछ बड़े जो लादने के काम में आते हैं कुछ छोटे मिस्ल बकरी वग़ैरा के जो इस क़ाबिल नहीं, इन में से जो अल्लाह तआ़ला ने ह़लाल किये उन्हें खाओ और अहले जाहिलिय्यत की त़रह़ अल्लाह की ह़लाल फ़रमाई हुई चीज़ों को ह़राम न ठहराओ। **293 :** या'नी अल्लाह तआ़ला ने न भेड़ बकरी के नर ह़राम किये न उन की मादाएं ह़राम कीं न उन की औलाद, इन में तुम्हारा येह फ़े'ल कि कभी नर ह़राम ठहराओ कभी मादा कभी उन के बच्चे येह सब तुम्हारा इख़्तिराअ़ है (या'नी तुम्हारी ईजाद है) और हवाए नफ़्स का इत्तिबाअ़। कोई ह़लाल चीज़ किसी के ह़राम करने से ह़राम नहीं होती। **294 :** इस आयत में अहले जाहिलिय्यत को तौबीख़ की गई जो अपनी त़रफ़ से ह़लाल चीज़ों को ह़राम ठहरा लिया करते थे जिन का ज़िक्र ऊपर की आयात में आ चुका है। जब इस्लाम में अह़काम का बयान हुवा तो उन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से जिदाल (झगड़ा) किया और उन का ख़त़ीब मालिक बिन औ़फ़ जुशमी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर कहने लगा कि या मुह़म्मद ! (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم) हम ने सुना है की आप उन चीज़ों को ह़राम करते हैं जो हमारे बाप दादा करते चले आए हैं, हुज़ूर ने फ़रमाया : तुम ने बिग़ैर किसी अस्ल के चन्द क़िस्में चौपायों की ह़राम कर लीं और अल्लाह तआ़ला ने आठ नर व मादा अपने बन्दों के खाने और उन के नफ़्अ़ उठाने के लिये पैदा किये, तुम ने कहां से उन्हें ह़राम किया ? उन में ह़ुरमत नर की त़रफ़ से आई या मादा की त़रफ़ से ? मालिक बिन औ़फ़ येह सुन कर साकित और मुतह़य्यिर (ह़ैरान) रह गया और कुछ न बोल सका, नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बोलता क्यूं नहीं ? कहने लगा : आप फ़रमाइये मैं सुनूंगा। سُبْحٰنَ اللّٰه ! सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم के कलाम की क़ुव्वत और ज़ोर ने अहले जाहिलिय्यत के ख़त़ीब को साकित व ह़ैरान कर दिया और वोह बोल ही क्या सकता था अगर कहता कि नर की त़रफ़ से ह़ुरमत आई तो लाज़िम होता कि तमाम नर ह़राम हों अगर कहता कि मादा की त़रफ़ से तो ज़रूरी होता कि हर एक मादा ह़राम हो और अगर कहता जो पेट में है वोह ह़राम है तो फिर सब ही ह़राम हो जाते क्यूं कि जो पेट में रहता है वोह नर होता है या मादा। वोह जो तख़्सीसें क़ाइम करते थे और बा'ज़ को ह़लाल और बा'ज़ को ह़राम क़रार देते थे इस हुज्जत ने उन के इस दा'वए तह़रीम को बात़िल कर दिया, इलावा बरीं उन से येह दरयाफ़्त करना कि अल्लाह ने नर ह़राम किये हैं या मादा या उन के बच्चे येह मुन्किरे नुबुव्वत मुख़ालिफ़ को इक़्रारे नुबुव्वत पर मजबूर करता था क्यूं कि जब तक नुबुव्वत का वासित़ा न हो तो अल्लाह तआ़ला की मरज़ी और उस का किसी चीज़ को ह़राम फ़रमाना कैसे जाना जा सकता है। चुनान्चे अगले जुम्ले ने इस को साफ़ किया है। **295 :** जब येह नहीं है और नुबुव्वत का तो इक़्रार नहीं करते तो इन अह़कामे ह़ुरमत को अल्लाह की त़रफ़ निस्बत करना किज़्ब व बात़िल व इफ़्तिराए ख़ालिस है।

www.dawateislami.net

مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

कौन जो अल्लाह पर झूट बांधे कि लोगों को अपनी जहालत से गुमराह करे बेशक अल्लाह

لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۴﴾ قُلْ لَّاۤ اَجِدُ فِيْ مَاۤ اُوْحِيَ اِلَيَّ مُحَرَّمًا

ज़ालिमों को राह नहीं दिखाता तुम फ़रमाओ[296] मैं नहीं पाता उस में जो मेरी तरफ़ वहय हुई किसी खाने

عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗۤ اِلَّاۤ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ

वाले पर कोई खाना हराम[297] मगर येह कि मुर्दार हो या रगों का बहता ख़ून[298] या बद जानवर का

خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ

गोश्त कि वोह नजासत है या वोह बे हुक्मी का जानवर जिस के ज़ब्ह में ग़ैरे ख़ुदा का नाम पुकारा गया तो जो नाचार हुवा[299] न यूं कि आप ख़्वाहिश

بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴۵﴾ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا

करे और न यूं कि ज़रूरत से बढ़े तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है[300] और यहूदियों पर हम ने

حَرَّمْنَا كُلَّ ذِيْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَاۤ

हराम किया हर नाख़ुन वाला जानवर[301] और गाय और बकरी की चरबी उन पर हराम की

اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَاۤ اَوِ الْحَوَايَاۤ اَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ

मगर जो उन की पीठ में लगी हो या आंत में या हड्डी से मिली हो हम ने

جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۫ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿۱۴۶﴾ فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ

येह उन की सरकशी का बदला दिया[302] और बेशक हम ज़रूर सच्चे हैं फिर अगर वोह तुम्हें झुटलाएं तो तुम फ़रमाओ कि तुम्हारा रब

ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۴۷﴾

वसीअ रहमत वाला है[303] और उस का अ़ज़ाब मुजरिमों पर से नहीं टाला जाता[304]

296 : उन जाहिल मुश्रिकों से जो हलाल चीज़ों को अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स से हराम कर लेते हैं। **297 :** इस में तम्बीह है कि हुरमत जिहते शरअ से साबित होती है, न हवाए नफ़्स से। **मस्अला :** तो जिस चीज़ की हुरमत शरअ में वारिद न हो उस को ना जाइज़ व हराम कहना बातिल। सुबूते हुरमत ख़्वाह वहये कुरआनी से हो या वहये हदीस से येही मो'तबर है। **298 :** तो जो ख़ून बहता न हो मिस्ल जिगर व तिल्ली के वोह हराम नहीं। **299 :** और ज़रूरत ने उसे इन चीज़ों में से किसी के खाने पर मजबूर किया ऐसी हालत में मुज़्तर हो कर उस ने कुछ खाया। **300 :** इस पर मुआख़ज़ा न फ़रमाएगा। **301 :** जो उंगली रखता हो ख़्वाह चौपाया हो या परिन्द इस में ऊंट और शुतुर मुर्ग़ दाख़िल हैं। (مدارک) बा'ज़ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि यहां शुतुर मुर्ग़ और बत (बतख़) और ऊंट ख़ास तौर पर मुराद हैं। **302 :** यहूद अपनी सरकशी के बाइस उन चीज़ों से महरूम किये गए लिहाज़ा येह चीज़ें उन पर हराम रहीं और हमारी शरीअत में गाय बकरी की चरबी और ऊंट और बत और शुतुर मुर्ग़ हलाल हैं इसी पर सहाबा और ताबिईन का इज्माअ है। (تفسیر احمدی) **303 :** मुकज़्ज़िबीन (झुटलाने वालों) को मोहलत देता है और अ़ज़ाब में जल्दी नहीं फ़रमाता ताकि उन्हें ईमान लाने का मौक़अ़ मिले। **304 :** अपने वक़्त पर आ ही जाता है।

www.dawateislami.net

سَیَقُوْلُ الَّذِیْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَاۤ اَشْرَكْنَا وَلَاۤ اٰبَآؤُنَا

अब कहेंगे मुश्रिक कि[305] अल्लाह चाहता तो न हम शिर्क करते न हमारे बाप दादा

وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَیْءٍؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوْا

न हम कुछ ह़राम ठहराते[306] ऐसा ही इन से अगलों ने झुटलाया था यहां तक कि हमारा

بَاْسَنَاؕ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَاؕ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا

अ़ज़ाब चखा[307] तुम फ़रमाओ क्या तुम्हारे पास कोई इ़ल्म है कि उसे हमारे लिये निकालो तुम तो निरे गुमान

الظَّنَّ وَ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ﴿۱۴۸﴾ قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُۚ فَلَوْ

के पीछे हो और तुम यूंही तख़्मीने करते हो[308] तुम फ़रमाओ तो अल्लाह ही की हुज्जत पूरी है[309] तो वोह

شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِیْنَ ﴿۱۴۹﴾ قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِیْنَ یَشْهَدُوْنَ

चाहता तो तुम सब को हिदायत फ़रमाता तुम फ़रमाओ लाओ अपने वोह गवाह जो गवाही दें

اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَاۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْۚ وَ لَا تَتَّبِعْ

कि अल्लाह ने इसे ह़राम किया[310] फिर अगर वोह गवाही दे बैठें[311] तो ऐ सुनने वाले उन के साथ गवाही न देना और उन की ख़्वाहिशों

اَهْوَآءَ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَ هُمْ

के पीछे न चलना जो हमारी आयतें झुटलाते हैं और जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और अपने

ع ١٨/٥ بِرَبِّهِمْ یَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۰﴾ قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَیْكُمْ اَلَّا

रब का बराबर वाला ठहराते हैं[312] तुम फ़रमाओ आओ मैं तुम्हें पढ़ सुनाऊं जो तुम पर तुम्हारे रब ने ह़राम किया[313] येह कि

تُشْرِكُوْا بِهٖ شَیْــٴًـا وَّ بِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًاۚ وَ لَا تَقْتُلُوْۤا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ

उस का कोई शरीक न करो और मां बाप के साथ भलाई[314] और अपनी औलाद क़त्ल न करो

305 : येह ख़बरे ग़ैब है कि जो बात वोह कहने वाले थे वोह बात पहले से बयान फ़रमा दी। **306 :** हम ने जो कुछ किया येह सब अल्लाह की मशिय्यत से हुवा, येह दलील है इस की, कि वोह इस से राज़ी है। **307 :** और येह उ़ज़्रे बात़िल उन के कुछ काम न आया क्यूं कि किसी अम्र का मशिय्यत में होना उस की मरज़ी व मामूर होने को मुस्तल्ज़िम नहीं, मरज़ी वोही है जो अम्बिया के वासित़े से बताई गई और उस का अम्र फ़रमाया गया। **308 :** और ग़लत़ अट्कलें चलाते हो। **309 :** कि उस ने रसूल भेजे किताबें नाज़िल फ़रमाईं और राहे ह़क़ वाज़ेह़ कर दी। **310 :** जिसे तुम अपने लिये ह़राम क़रार देते हो और कहते हो कि अल्लाह तआ़ला ने हमें इस का हुक्म दिया है। येह गवाही इस लिये त़लब की गई कि ज़ाहिर हो जाए कि कुफ़्फ़ार के पास कोई शाहिद नहीं है और जो वोह कहते हैं वोह उन की तराशीदा बात है। **311 :** इस में तम्बीह है कि अगर येह शहादत वाक़ेअ़ हो भी तो वोह मह़ज़ इत्तिबाए़ हवा और किज़्ब व बात़िल होगी। **312 :** बुतों को मा'बूद मानते हैं और शिर्क में गिरिफ़्तार हैं। **313 :** उस का बयान येह है **314 :** क्यूं कि तुम पर उन के बहुत हुक़ूक़ हैं उन्हों ने तुम्हारी परवरिश की, तुम्हारे साथ शफ़्क़त और मेह़रबानी का सुलूक किया, तुम्हारी हर ख़त़रे से निगहबानी की, उन के हुक़ूक़ का लिह़ाज़ न करना और उन के साथ हुस्ने सुलूक का तर्क करना ह़राम है।

www.dawateislami.net

اِمْلَاقٍ ؕ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ

मुफ़्लिसी के बाइस हम तुम्हें और उन्हें सब को रिज़्क़ देंगे[315] और बे हयाइयों के पास न जाओ जो इन में

مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ؕ

खुली हैं और जो छुपी[316] और जिस जान की अल्लाह ने हुरमत रखी उसे नाहक़ न मारो[317]

ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۵۱﴾ وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا

येह तुम्हें हुक्म फ़रमाया है कि तुम्हें अ़क़्ल हो और यतीमों के माल के पास न जाओ मगर

بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ

बहुत अच्छे त़रीक़े से[318] जब तक वोह अपनी जवानी को पहुंचे[319] और नाप और तोल इन्साफ़ के साथ

بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ

पूरी करो हम किसी जान पर बोझ नहीं डालते मगर उस के मक़्दूर भर और जब बात कहो तो इन्साफ़ की कहो अगर्चे तुम्हारे

ذَا قُرْبٰى ۚ وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۱۵۲﴾

रिश्तेदार का मुआ़मला हो और अल्लाह ही का अ़हद पूरा करो येह तुम्हें ताकीद फ़रमाई कि कहीं तुम नसीह़त मानो

وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ

और येह कि[320] येह है मेरा सीधा रास्ता तो इस पर चलो और और राहें न चलो[321] कि तुम्हें

بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۵۳﴾ ثُمَّ اٰتَيْنَا

उस की राह से जुदा कर देंगी येह तुम्हें हुक्म फ़रमाया कि कहीं तुम्हें परहेज़ गारी मिले फिर हम ने

مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ

मूसा को किताब अ़त़ा फ़रमाई[322] पूरा एह़सान करने को उस पर जो निकोकार है और हर चीज़ की तफ़्सील

315 : इस में औलाद को ज़िन्दा दरगोर करने और मार डालने की हुरमत बयान फ़रमाई गई जिस का अहले जाहिलिय्यत में दस्तूर था कि वोह अक्सर नादारी के अन्देशे से औलाद को हलाक करते थे उन्हें बताया गया कि रोज़ी देने वाला तुम्हारा, उन का, सब का अल्लाह है फिर तुम क्यूं क़त्ल जैसे शदीद जुर्म का इरतिकाब करते हो। **316 :** क्यूं कि इन्सान जब खुले और ज़ाहिर गुनाह से बचे और छुपे गुनाह से परहेज़ न करे तो उस का ज़ाहिर गुनाह से बचना भी लिल्लाहिय्यत से नहीं लोगों के दिखाने और उन की बदगोई से बचने के लिये है और अल्लाह की रिज़ा व सवाब का मुस्तह़िक़ वोह है जो उस के ख़ौफ़ से गुनाह तर्क करे। **317 :** वोह उमूर जिन से क़त्ल मुबाह़ होता है येह हैं : मुरतद होना या क़िसास या बियाहे हुए का ज़िना। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कोई मुसल्मान जो "لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه" की गवाही देता हो उस का ख़ून ह़लाल नहीं मगर इन तीन सबबों में से किसी एक सबब से या तो बियाहे होने के बा वुजूद उस से ज़िना सरज़द हुवा हो या उस ने किसी को नाहक़ क़त्ल किया हो और उस का क़िसास उस पर आता हो या वोह दीन छोड़ कर मुरतद हो गया हो। **318 :** जिस से उस का फ़ाएदा हो। **319 :** उस वक़्त उस का माल उस के सिपुर्द कर दो। **320 :** इन दोनों आयतों में जो हुक्म दिया। **321 :** जो इस्लाम के ख़िलाफ़ हों यहूदिय्यत हो या

www.dawateislami.net

وَّهُدًى وَّرَحْمَةٌ لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ وَهٰذَا كِتٰبٌ

और हिदायत और रह़मत कि कहीं वोह[323] अपने रब से मिलने पर ईमान लाएं[324] और येह बरकत वाली किताब[325]

اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۱۵۵﴾ اَنْ تَقُوْلُوْٓا

हम ने उतारी तो इस की पैरवी करो और परहेज़ गारी करो कि तुम पर रह़म हो कभी कहो

اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَآئِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ۪ وَاِنْ كُنَّا عَنْ

कि किताब तो हम से पहले दो गुरोहों पर उतरी थी[326] और हमें उन के

دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿۱۵۶﴾ اَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ

पढ़ने पढ़ाने की कुछ ख़बर न थी[327] या कहो कि अगर हम पर किताब उतरती तो हम उन से

اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ

ज़ियादा ठीक राह पर होते[328] तो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की रोशन दलील और हिदायत और रह़मत आई[329]

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ؕ سَنَجْزِي الَّذِيْنَ

तो उस से ज़ियादा ज़ालिम कौन जो अल्लाह की आयतों को झुटलाए और उन से मुंह फेरे अ़न्क़रीब वोह जो हमारी

يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ﴿۱۵۷﴾ هَلْ

आयतों से मुंह फेरते हैं हम उन्हें बुरे अ़ज़ाब की सज़ा देंगे बदला उन के मुंह फेरने का काहे के

يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِيَ بَعْضُ اٰيٰتِ

इन्तिज़ार में हैं[330] मगर येह कि आएं उन के पास फ़िरिश्ते[331] या तुम्हारे रब का अ़ज़ाब आए या तुम्हारे रब की एक निशानी

رَبِّكَ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ

आए[332] जिस दिन तुम्हारे रब की वोह एक निशानी आएगी किसी जान को ईमान लाना काम न देगा जो पहले

नसरानिय्यत या और कोई मिल्लत **322 :** तौरैत **323 :** या'नी बनी इसराईल **324 :** और बअ़्स व ह़िसाब और सवाब व अ़ज़ाब और दीदारे इलाही की तस्दीक़ करें। **325 :** या'नी क़ुरआन शरीफ़ जो कसीरुल ख़ैर और कसीरुन्नफ़अ़ और कसीरुल बरकत है और क़ियामत तक बाक़ी रहेगा और तह़रीफ़ व तब्दील व नस्ख़ से मह़फ़ूज़ रहेगा। **326 :** या'नी यहूदो नसारा पर तौरैत और इन्जील **327 :** क्यूं कि वोह हमारी ज़बान ही में न थी न हमें किसी ने उस के मा'ना बताए अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने करीम नाज़िल फ़रमा कर उन के इस उ़ज़्र को क़त़्अ़ फ़रमा दिया। **328 :** कुफ़्फ़ार की एक जमाअ़त ने कहा था कि यहूदो नसारा पर किताबें नाज़िल हुईं मगर वोह बद अ़क़्ली में गिरिफ़्तार रहे उन किताबों से मुन्तफ़ेअ़ (नफ़अ़ उठाने वाले) न हुए हम उन की त़रह़ ख़फ़ीफ़ुल अ़क़्ल (कम अ़क़्ल) और नादान नहीं हैं हमारी अ़क़्लें सह़ीह़ हैं हमारी अ़क़्लो ज़हानत और फ़हमो फ़िरासत ऐसी है कि अगर हम पर किताब उतरती तो हम ठीक राह पर होते, क़ुरआन नाज़िल फ़रमा कर उन का येह उ़ज़्र भी क़त़्अ़ फ़रमा दिया। चुनान्चे आगे इर्शाद होता है **329 :** या'नी येह क़ुरआने पाक जिस में ह़ुज्जते वाज़ेह़ा और बयाने साफ़ और हिदायत व रह़मत है। **330 :** जब वह़दानिय्यत व रिसालत पर ज़बर दस्त ह़ुज्जतें क़ाइम हो चुकीं और ए'तिक़ादाते कुफ़्रो ज़लाल का बुत़्लान ज़ाहिर कर दिया गया तो अब ईमान लाने में क्यूं तवक़्क़ुफ़ है क्या इन्तिज़ार बाक़ी है ? **331 :** उन

www.dawateislami.net

اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْۤ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ؕ قُلِ انْتَظِرُوْۤا اِنَّا

ईमान न लाई थी या अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई थी[333] तुम फ़रमाओ रस्ता देखो[334] हम

مُنْتَظِرُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَ كَانُوْا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ

भी देखते हैं वोह जिन्हों ने अपने दीन में जुदा जुदा राहें निकालीं और कई गुरौह हो गए[335] ऐ महबूब तुम्हें उन से कुछ

فِيْ شَیْءٍ ؕ اِنَّمَاۤ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿۱۵۹﴾

अलाक़ा (तअ़ल्लुक़) नहीं उन का मुआ़मला अल्लाह ही के ह़वाले है फिर वोह उन्हें बता देगा जो कुछ वोह करते थे[336]

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَ مَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا

जो एक नेकी लाए तो उस के लिये उस जैसी दस हैं[337] और जो बुराई लाए तो उसे

يُجْزٰۤى اِلَّا مِثْلَهَا وَ هُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ قُلْ اِنَّنِيْ هَدٰىنِيْ رَبِّيْۤ اِلٰى

बदला न मिलेगा मगर उस के बराबर और उन पर जुल्म न होगा तुम फ़रमाओ बेशक मुझे मेरे रब ने

صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ۬ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ۚ وَ مَا كَانَ مِنَ

सीधी राह दिखाई[338] ठीक दीन इब्राहीम की मिल्लत जो हर बातिल से जुदा थे और मुश्रिक

الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۶۱﴾ قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَ نُسُكِيْ وَ مَحْيَايَ وَ مَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ

न थे[339] तुम फ़रमाओ बेशक मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानियां और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिये है

की अरवाह़ क़ब्ज़ करने के लिये **332 :** क़ियामत की निशानियों में से। जुम्हूर मुफ़स्सिरीन के नज़्दीक इस निशानी से आफ़्ताब का मग़रिब से तुलूअ़ होना मुराद है। तिरमिज़ी की ह़दीस में भी ऐसा ही वारिद है। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीस में है कि क़ियामत क़ाइम न होगी जब तक आफ़्ताब मग़रिब से तुलूअ़ न करे और जब वोह मग़रिब से तुलूअ़ करेगा और उसे लोग देखेंगे तो सब ईमान लाएंगे और येह ईमान नफ़्अ़ न देगा **333 :** या'नी त़ाअ़त न की थी, मा'ना येह हैं कि निशानी आने से पहले जो ईमान न लाए निशानी के बा'द उस का ईमान क़बूल नहीं इसी त़रह़ जो निशानी से पहले तौबा न करे बा'द निशानी के उस की तौबा क़बूल नहीं लेकिन जो ईमानदार पहले से नेक अ़मल करते होंगे निशानी के बा'द भी उन के अ़मल मक़्बूल होंगे। **334 :** उन में से किसी एक का या'नी मौत के फ़िरिश्तों की आमद या अ़ज़ाब या निशानी आने का। **335 :** मिस्ल यहूदो नसारा के। ह़दीस शरीफ़ में है यहूद इक्हत्तर फ़िर्क़े हो गए उन से सिर्फ़ एक नाजी (नजात पाने वाला) है बाक़ी सब नारी और नसारा बहत्तर फ़िर्क़े हो गए एक नाजी बाक़ी सब नारी और मेरी उम्मत तिहत्तर फ़िर्क़े हो जाएगी। वोह सब के सब नारी होंगे सिवाए एक के जो सवादे आ'ज़म या'नी बड़ी जमाअ़त है और एक रिवायत में है कि जो मेरी और मेरे अस्ह़ाब की राह पर है। **336 :** और आख़िरत में उन्हें अपने किरदार का अन्जाम मा'लूम हो जाएगा। **337 :** या'नी एक नेकी करने वाले को दस नेकियों की जज़ा और येह भी ह़द व निहायत के त़रीक़े पर नहीं बल्कि अल्लाह तआ़ला जिस के लिये जितना चाहे उस की नेकियों को बढ़ाए एक के सात सो करे या बे ह़िसाब अ़त़ा फ़रमाए, अस्ल येह है कि नेकियों का सवाब महज़ फ़ज़्ल है येही मज़्हब है अहले सुन्नत का और बदी की इतनी ही जज़ा येह अ़द्ल है। **338 :** या'नी दीने इस्लाम जो अल्लाह को मक़्बूल है। **339 :** इस में कुफ़्फ़ारे क़ुरैश का रद है जो गुमान करते थे कि वोह दीने इब्राहीमी पर हैं अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام मुश्रिक व बुत परस्त न थे तो बुत परस्ती करने वाले मुश्रिकीन का येह दा'वा कि वोह इब्राहीमी मिल्लत पर हैं बातिल है।

www.dawateislami.net

الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۶۲﴾ لَا شَرِیْكَ لَهٗ ۚ وَ بِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَ اَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِیْنَ ﴿۱۶۳﴾

जो रब सारे जहान का उस का कोई शरीक नहीं मुझे येही हुक्म हुवा है और मैं सब से पहला मुसल्मान हूं[340]

قُلْ اَغَیْرَ اللّٰهِ اَبْغِیْ رَبًّا وَّ هُوَ رَبُّ كُلِّ شَیْءٍ ؕ وَ لَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ

तुम फ़रमाओ क्या **अल्लाह** के सिवा और रब चाहूं हालां कि वोह हर चीज़ का रब है[341] और जो कोई कुछ कमाए वोह

اِلَّا عَلَیْهَا ۚ وَ لَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰی ۚ ثُمَّ اِلٰی رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ

उसी के ज़िम्मे है और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी[342] फिर तुम्हें अपने रब की त़रफ़ फिरना है[343]

فَیُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِیْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ وَ هُوَ الَّذِیْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ

वोह तुम्हें बता देगा जिस में इख़्तिलाफ़ करते थे और वोही है जिस ने ज़मीन में तुम्हें

الْاَرْضِ وَ رَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّیَبْلُوَكُمْ فِیْ مَاۤ

नाइब किया[344] और तुम में एक को दूसरे पर दरजों बुलन्दी दी[345] कि तुम्हें आज़्माए[346] उस चीज़ में जो

ع ۲۰ النصف
اٰتٰىكُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ سَرِیْعُ الْعِقَابِ ۖ٘ وَ اِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿۱۶۵﴾ ع

तुम्हें अ़ता की बेशक तुम्हारे रब को अ़ज़ाब करते देर नहीं लगती और बेशक वोह ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है।

ایاتها ۲۰٦ ‏ ‏ ٧ سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ مَكِّیَّةٌ ٣٩ ‏ ‏ ركوعاتها ٢٤

सूरए आ'राफ़ मक्किय्या है, इस में दो सो छ[6] आयतें और चौबीस रुकूअ़ हैं[1]

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़्म वाला

340 : "अव्वलिय्यत" या तो इस ए'तिबार से है कि अम्बिया का इस्लाम उन की उम्मत पर मुक़द्दम होता है या इस ए'तिबार से कि सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم अव्वले मख़्लूक़ात हैं तो ज़रूर अव्वलुल मुस्लिमीन हुए। **341 शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ार ने नबिय्ये करीम صلی اللہ علیہ وسلم से कहा था कि आप हमारे दीन की त़रफ़ लौट आइये और हमारे मा'बूदों की इ़बादत कीजिये। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ عنہما ने फ़रमाया कि वलीद बिन मुग़ीरा कहता था कि मेरा रस्ता इख़्तियार करो इस में अगर कुछ गुनाह है तो मेरी गरदन पर, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और बताया गया कि वोह रस्ता बात़िल है ख़ुदा शनास किस त़रह़ गवारा कर सकता है कि **अल्लाह** के सिवा किसी और को रब बताए और येह भी बात़िल है कि किसी का गुनाह दूसरा उठा सके। **342 :** हर शख़्स अपने गुनाह में माख़ूज़ (पकड़ा हुवा) होगा दूसरे के गुनाह में नहीं। **343 :** रोज़े क़ियामत **344 :** क्यूं कि सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं आप के बा'द कोई नबी नहीं और आप की उम्मत आख़िरुल उमम है इस लिये इन को ज़मीन में पहलों का ख़लीफ़ा किया कि इस के मालिक हों और इस में तसर्रुफ़ करें। **345 :** शक्लो सूरत में, हुस्नो जमाल में, रिज़्क़ो माल में, इ़ल्मो अ़क़्ल में, क़ुव्वतो कमाल में **346 :** या'नी आज़्माइश में डाले कि तुम ने'मत व जाहो माल पा कर कैसे शुक्र गुज़ार रहते हो और बाहम एक दूसरे के साथ किस क़िस्म के सुलूक करते हो। **1 :** येह सूरत मक्कए मुकर्रमा में नाज़िल हुई और एक रिवायत में है कि येह सूरत मक्किय्या है सिवा पांच आयतों के जिन में से पहली "وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْیَةِ الَّتِیْ" है। इस सूरत में दो सो छ[6] आयतें और चौबीस रुकूअ़ हैं और तीन हज़ार तीन सो पच्चीस कलिमे और चौदह हज़ार दस ह़र्फ़ हैं।

www.dawateislami.net